बेस्टसेलर 'मैं मन हूँ' और 'मैं कृष्ण हूँ' के लेखक
दीप त्रिवेदी द्वारा लिखित

व्यंग अपने चरम पर!

मुझे सहिष्णुता मत सिखाओ

-भारत

दीप त्रिवेदी

मुझे सहिष्णुता मत सिखाओ -भारत

अनुक्रमणिका

नं. प्रस्तावना

1. लेखक का परिचय
2. मशहूर वक्ता
3. लेखक की कलम से…
4. कॉपीराइट पेज

मुझे सहिष्णुता मत सिखाओ -भारत

लेखक का परिचय

दीप त्रिवेदी

दीप त्रिवेदी एक प्रसिद्ध लेखक, वक्ता और स्पीरिच्युअल सायको-डाइनैमिक्स के पायनियर हैं जो कि एक व्यापक दृष्टिकोण से ना सिर्फ लिखते हैं, बल्कि विभिन्न विषयों पर लेक्चर्स भी कंडक्ट करते हैं. इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्हें पढ़ने व सुनने-मात्र से मनुष्य में आमूल सकारात्मक परिवर्तन आ जाता है. वे अपने कार्यों द्वारा आजतक हजारों लोगों को सुख और सफलता के मार्ग पर लगा चुके हैं.

दीप त्रिवेदी ने अपने इन कार्यों द्वारा प्रकृति, उसके नियम, उसका आचरण, उसकी सायकोलोजी और उसके मनुष्यजीवन पर पड़नेवाले प्रभाव को बड़ी ही गहराई से समझाया है. जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है जिसे उन्होंने न छूआ हो. वे कहते हैं कि सायकोलोजी के बाबत कम ज्ञान और कम समझ होना ही मनुष्य-जीवन के तमाम दु:खों और असफलताओं का मूल कारण है.

बेस्टसेलर 'मैं मन हूँ' और कई अन्य किताबों के लेखक, दीप त्रिवेदी की खास बात यह है कि वे जीवन के गहरे-से-गहरे पहलुओं को छूते हैं और उन्हें सरलतम भाषा में लोगों के सामने प्रस्तुत करते हैं जिससे कन्फ्यूजन की कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं बचती है.

मनुष्यजीवन की गहरे-से-गहरी सायकोलोजी पर उनकी पकड़ का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मनुष्य के जीवन पर सर्वाधिक 12038 कोटेशन लिखने का रेकार्ड उनके नाम पर दर्ज है. साथ ही मनुष्यजीवन पर सर्वाधिक लेक्चर्स देने का रेकॉर्ड भी उन्हीं के नाम पर है और यह दोनों रेकॉर्ड एशिया बुक ऑफ रेकॉर्ड्स और इंडिया बुक ऑफ रेकॉर्ड्स में दर्ज हैं. इसके अलावा, 'भगवद्गीता' पर सर्वाधिक लेक्चर्स देने का रेकॉर्ड भी उन्हीं के नाम पर है और यह भी एशिया बुक ऑफ रेकॉर्ड्स और इंडिया बुक ऑफ रेकॉर्ड्स में दर्ज है, जिसमें उन्होंने 58 दिनों में गीता पर 168 घंटे, 28 मिनट और 50 सेकंड तक एक लंबी चर्चा करी है. साथ ही अष्टावक्र गीता और ताओ-ते-चिंग पर भी सर्वाधिक लेक्चर्स देने का रेकॉर्ड उन्हीं के नाम पर एशिया बुक ऑफ रेकॉर्ड्स और इंडिया बुक ऑफ रेकॉर्ड्स में दर्ज है. ये सारे लेक्चर्स भारत में लाइव ऑडियन्स के सामने दिये गए थे. इसके अलावा भगवद्गीता और ताओ-ते-चिंग के सायकोलोजिकल पहलुओं पर उनके योगदान के लिए यूके की वर्ल्ड रेकॉर्ड्स यूनिवर्सिटी ने दीप त्रिवेदी को ऑनरेरी डॉक्टरेट की उपाधि भी प्रदान की है.

वे अपने लेख और लेक्चर्स में जिस अनोखी स्पीरिच्युअल-सायकोलोजिकल भाषा और एक्सप्रेशन का इस्तेमाल करते हैं उससे उन्हें पढ़ने तथा सुनने वालों में उसका तात्कालिक प्रभाव भी होने लगता है और यही बात उन्हें इस क्षेत्र का पायनियर बनाती है.

इनके बारे में और अधिक जानने के लिए विजिट करें : www.deeptrivedi.com

दीप त्रिवेदी - मशहूर वक्ता

दीप त्रिवेदी सायको-स्पीरिच्युअल कॉन्टेंट, आवाज, भाषा और एक्सप्रेशन का ऐसा मिश्रण प्रस्तुत करते हैं जिससे उन्हें देखने और सुनने वालों में तत्काल परिवर्तन आता है. सैकड़ों लोग सिर्फ उन्हें सुनने-मात्र से परिवर्तित हो चुके हैं. इसी वजह से उन्हें स्पीरिच्युअल सायको-डाइनैमिक्स का पायनियर भी कहा जाता है.

दीप त्रिवेदी जीवन से जुड़े हर विषय पर प्रकाश डालते हैं. जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है जिसे उन्होंने न छूआ हो. वे विभिन्न विषयों पर बोल चुके हैं जैसे भगवद्गीता, ताओ-ते-चिंग, अष्टावक्र गीता और:

प्रकृति के नियम
टाइम एण्ड स्पेस
धर्म
डीएनए-जीन्स
जीवन की राह
डे-स्लीप
मन और बुद्धि
व्यक्तित्व
हीनता
डर
गिल्ट
इन्वोल्वमेंट
पक्षपात
अपेक्षा
स्वीकार्यशक्ति
नेचरल इंटेलिजेंस
ट्रान्स्फर्मेशन
विवाह
स्वतंत्रता
भविष्य
हिपोक्रेसी

क्रिएटिविटी
कोन्सन्ट्रेशन
सुख और सफलता
समृद्धि
अच्छा-बुरा
भगवान
अहंकार
क्रोध
सेल्फ-कॉन्फिडेंस
प्रेम
कन्फ्यूजन

लेखक की कलम से...

जब अमेरिका के राष्ट्रपति ओबामा ने अपनी भारत-यात्रा के दौरान 'भारत को सहिष्णुता' का पाठ पढ़ाने की कोशिश की तो मैं आश्चर्यचकित रह गया. ...और यह किताब उसी आश्चर्य की कोख से निकली है. उनका यह बयान सुनते ही एक साथ कई प्रश्न मेरे जहन में घूमने लगे. सबसे पहली बात तो यह कि क्या वाकई भारत में इतनी असहिष्णुता व्याप्त है कि ओबामा को भारत को सहिष्णुता पर सबक देना पड़ जाए? और फिर क्या ओबामा सहिष्णुता का अर्थ भी समझते हैं या नहीं? सवाल तो यह भी कि क्या पश्चिमी देश इतने सहिष्णु हैं कि उनका कोई व्यक्ति भारत की धरती पर आकर उसकी ही सहिष्णुता पर उंगली उठा जाए? सवाल तो यह भी जहन में उठा कि किसी भारतीय लाल ने ओबामा की नसीहत का मुंह-तोड़ जवाब क्यों नहीं दिया?

...सो बस इन्हीं सब सवालों के उठते मैंने सहिष्णुता पर पूरी किताब ही लिख डाली. और जब पूरी किताब लिखी तो इसमें पूरे विश्व की सहिष्णुता को नापा भी. क्योंकि जब कोई दूसरा आकर हमें सहिष्णुता का पाठ पढ़ाए तो यह जानना जरूरी हो ही जाता है कि अन्य देश कितने सहिष्णु हैं. साथ ही यह बात भी काबिले गौर है कि सहिष्णुता के एक नहीं हजारों पैमाने हैं. दरअसल तो सहिष्णुता से ज्यादा व्यापक और महत्वपूर्ण दूसरा कोई शब्द हो ही नहीं सकता है. क्योंकि मनुष्य हो या परिवार, देश हो या समाज; उसके सुख और समृद्धि का आधार ही सहिष्णुता है. अत: मैंने इस किताब में सहिष्णुता की वास्तविक परिभाषा को भी विस्तार से समझाने का प्रयास किया है. इसके साथ ही इसमें मैंने विश्व में स्थित विभिन्न समाज, संप्रदाय तथा संस्कृति की सहिष्णुताओं को भी अच्छे से नापा-तौला है. भारत के तो वर्तमान प्रधानमंत्री से लेकर अतीत के सभी प्रमुख प्रधानमंत्रियों की अपने पद की गरिमा के प्रति सहिष्णुता को भी पूरा-पूरा परखा है.

हां, एकबात अवश्य है कि विषय की मांग को देखते हुए इस किताब की भाषा थोड़ी कटाक्षपूर्ण है. कई जगह करारे व्यंग भी कसे गए हैं. लेकिन इसमें किसी व्यक्ति, समाज या संप्रदाय को बुरा मानने की आवश्यकता नहीं है. क्योंकि एक बात तय है कि मैंने सबकुछ करुणावश तथा बिना पक्षपात के ही कहा है. हां, एक बात और कि अपनी बात कहते वक्त इस किताब में मैंने कई दृष्टांतों, तथ्यों तथा आंकड़ों का भी सहारा लिया है. क्योंकि इस किताब को यदि सहिष्णुता का वास्तविक पैमाना मापने की मशीन कहा जाए, तो भी गलत नहीं होगा. मुझे उम्मीद है कि इससे हरकोई अपनी व्यक्तिगत सहिष्णुता भी अच्छे से नाप-तौल सकेगा. और यह जरूरी भी है. क्योंकि अंत में तो जीवन के सुख और सफलता का पूरा दारोमदार सहिष्णुता पर ही टिका हुआ है. व्यक्ति हो, समाज हो या देश हो, आगे वही बढ़ा है जो सहिष्णु है. यहां यह भी स्पष्ट कर दूं कि मैंने यह किताब विश्व की तस्वीर बदलने हेतु लिखी है. उम्मीद करता हूँ कि मेरा यह रोचक प्रयास ना सिर्फ आपको पसंद आएगा,

बल्कि मेरा यह प्रयास आपको, आपके परिवार को, आपके समाज और देश को नई ऊंचाइयां छूने में सहायक भी सिद्ध होगा.
बस इसी उम्मीद के साथ मैं यह किताब आपको समर्पित करता हूँ.
आपका अपना,
भारत

दीप त्रिवेदी

कॉपीराइट

<u>मुझे सहिष्णुता मत सिखाओ -भारत</u>

प्रथम संस्करण : 2017

भारत में मुद्रित

संकल्पना, चित्रण व साज-सज्जाः
आत्मन इनोवेशन्स्
प्रकाशन का स्थान- मुंबई

www.aatmaninnovations.com

प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के आंशिक/संपूर्ण हिस्से का पुनरुत्पादन, भविष्य में पुन:प्राप्ति हेतु संग्रहण या अन्य किसी भी माध्यम से प्रसारण करने हेतु किसी भी साधनों यथा इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग के द्वारा करना सर्वथा निषिद्ध है.

© Aatman Innovations Pvt. Ltd.

मैं भारत हूँ... आप सभी लोग आश्चर्यचकित होंगे कि करोड़ों वर्षों में नहीं और आज ही क्यों मैं सबके सामने प्रकट हुआ हूँ, और वह भी कुछ कहने के लिए. ...तो इसके लिए मैं अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा को धन्यवाद देना चाहता हूँ. वैसे उनसे मुझे एक शिकायत भी है. साथ ही, उन्हें मैं एक नसीहत भी देना चाहता हूँ.

निश्चित ही...आप कहेंगे कि यह क्या बात हुई? एक ही व्यक्ति को धन्यवाद भी, उससे शिकायत भी और उसे नसीहत भी.... हां, क्या करूं? बात ही कुछ ऐसी है. और फिर मैं हूँ भी तो विशाल हृदय. आपके लिए धन्यवाद देना, शिकायत करना या नसीहत देना अलग-अलग भाव हो सकते हैं, परंतु मुझ विशाल-हृदय भारत के लिए तो यह सब एक ही बात है. मेरे हृदय में तो सबके प्रति प्रेम व करुणा ही है, फिर चाहे वे मेरी धरती की संतानें हों या किसी अन्य धरती की. क्योंकि अंत में तो वे सब भी हैं तो किसी-न-किसी धरती की ही संतानें. और फिर मैं तो माता व पिता दोनों हूँ. मनुष्य पैदा भी मेरी छाती पर होते हैं और पलते भी मेरी छाती पर ही हैं. सो, मेरी करुणा का आयाम समझना तो यूं भी हर किसी के बस की बात नहीं. खैर होगा, अभी तो पहले सीधे मैं ओबामा से बात कर लूं, जिनकी वजह से मैं आप सबके सामने प्रकट हुआ हूँ.

...तो मिस्टर ओबामा! आप भारत आए, मैंने और मेरी संतानों ने ना सिर्फ आपका शानदार स्वागत किया बल्कि आपको अपने सर-आंखों पर भी बिठाया. बिठाना ही चाहिए, यही भारतीय परंपरा है. यूं भी विश्व के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र के राष्ट्राध्यक्ष होने के नाते आप इस शानदार स्वागत के योग्य भी थे. और फिर आपका जाती व्यक्तित्व भी तो शानदार है. अत: आपका शानदार स्वागत होना ही था, तथा वह करके मेरी संतानों ने मेरा सर ऊंचा ही किया है. सो यह कोई खास बात नहीं. खास बात तो वहां से शुरू हुई जब भारत से जाते-जाते आपने मेरी संतानों को सहिष्णुता सिखाने की कोशिश की. हो सकता है कि आप वह वक्तव्य देकर भूल भी गए हों. सो, आपको आपका वह वक्तव्य मैं याद दिला देता हूँ. आपका वक्तव्य था कि "हर व्यक्ति को ये अधिकार है कि वह अपनी धार्मिक मान्यताओं का पालन बिना किसी उत्पीड़न, भय और भेदभाव के करे. भारत तभी तक प्रगति कर सकेगा जब तक उसे धर्म के आधार पर कुचला नहीं जाएगा. भारत के संविधान के 25 वें अनुच्छेद में कहा गया है कि सभी लोगों को अपने विचारों को व्यक्त करने की स्वतन्त्रता है. साथ ही भारत के संविधान में सभी को यह अधिकार भी उपलब्ध है कि वे खुले तौर पर अपनी धार्मिक मान्यताओं का ना सिर्फ पालन करे, बल्कि उसका प्रचार-प्रसार भी करे." और ठीक उसके कुछ समय पश्चात आपने कहा "लेकिन पिछले कुछ सालों से सभी प्रकार की धार्मिक मान्यताओं ने समय-समय पर दूसरे लोगों की मान्यताओं को, उनके विश्वास और उनकी परंपराओं को ठेस पहुंचाई है. असहिष्णुता की ऐसी घटनाएं गांधीजी को हैरान कर के रख देती, जिन्होंने आपके देश को आजादी दिलाई थी."

सच कहूं तो आपके इस वक्तव्य ने मुझे गहरी चोट पहुंचाई. उसने मुझे एक ऐसी वेदना दी जिसका अनुभव मैंने अपने करोड़ों वर्षों के अस्तित्व में पहली बार किया. अब मैं तो पहले ही कह चुका हूँ कि मेरा हृदय अति विशाल है, और वह होना ही है. आखिर एक सौ बत्तीस करोड़ संतानें मेरी छाती पर पलती हैं. एकबार को अस्सी-सौ वर्ष जीनेवाले मनुष्य के हृदय तो संकुचित हो सकते हैं, परंतु करोड़ों वर्षों से उनको पैदा करने तथा पालनेवाले का हृदय कैसे संकुचित हो सकता है? सो मैं, चाहे जो हो जाए, तुम्हारे इरादे पर तो शक कर ही नहीं सकता. यह तो मैं सोच ही नहीं सकता कि यह वक्तव्य तुमने मुझे तथा मेरी संतानों को बदनाम करने हेतु या उन्हें नीचा दिखाने हेतु कहा होगा. नहीं...मैं यह मानकर ही चल रहा हूँ कि तुमने यह बात मेरी संतानों के प्रति करुणावश ही कही होगी.

बराक, तुम विश्व के सबसे बड़े पद पर बैठे व्यक्ति थे. इस छोटी उम्र में यह मुकाम पाना निश्चित ही तुम्हारे व्यक्तित्व और प्रतिभा, दोनों को दर्शाता है. लेकिन मैं स्पष्ट कहूं तो यह वक्तव्य देते वक्त तुमने अपने पद की गरिमा के प्रति तुम्हारी जो जिम्मेदारी होती है, उसका निर्वाह नहीं किया. तुमसे एक बड़ी चूक हुई. भारत की संतानों को सहिष्णुता का पाठ पढ़ाने से पूर्व यह तुम्हारी जिम्मेदारी थी कि भारत की सहिष्णुता का इतिहास अच्छे से टटोल लेते. साथ ही बेहतर होता यदि तुम अन्य सभ्यताओं के इतिहास को भी थोड़ा देख लेते. अत: मैं तुम्हारी जानकारी के लिए यह बता दूं कि मेरी संतानें शुरू से, हर युग में अन्य धरती की संतानों के मुकाबले ज्यादा सहिष्णु रही हैं. और वे एक-दो नहीं, हर मामले में सर्वाधिक सहिष्णु रही हैं. उन्होंने सहिष्णुता के मामलों में मेरा सर अन्य राष्ट्रों से हमेशा ऊंचा रखा है.

खैर, तुमने अपना वक्तव्य धार्मिक सहिष्णुता का पाठ पढ़ाने पर दिया था, सो पहले मैं अपनी धरती की संतानों की धार्मिक सहिष्णुता बाबत ही बात कर लेता हूँ. और कोई भी बात समझाने का सबसे आसान तरीका होता है, उदाहरण देना. यूं भी आजकल आप सब वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं. इस युग में मनुष्य की चेतना ने विकास की एक अद्भुत ऊंचाई छूई है. पहले का मनुष्य बातों पर अंधा विश्वास कर लेता था. परंतु आज का मनुष्य चिंतनशील है. वह बात की सत्यता सिद्ध न हो, तबतक उसपर आसानी से विश्वास नहीं करता है. करना चाहिए भी नहीं, क्योंकि यही तो वह एक गुण है जिसके बूते पर आज के मनुष्य ने प्रगति के ऊंचे-ऊंचे शिखर छूए हैं. सच कहता हूँ कि आज मैं जो प्रगति देख रहा हूँ...वह युगों हो गए, मैंने नहीं देखी. आप लोगों की यह प्रगति देख मेरा ही नहीं, हर धरती का सीना गर्व से चौड़ा हुआ जा रहा है. हां, एक बात का अफसोस कभी-कभी अवश्य होता है कि आज के इस वैज्ञानिक युग में भी अधिकांश लोग अब भी अंधविश्वासी ही हैं. मारे डर के नाना प्रकार की ऊंची, हवाई एवं झूठी बातों के शिकार हैं. और उन्हीं लोगों के कारण प्रगति में रुकावटें पैदा हो रही हैं. अब इस कारण उनका जीवन तो कष्टपूर्ण है ही है, साथ ही उनके कारण चेतनाशील मनुष्यों की मेहनत के भी वांछित परिणाम नहीं आ रहे हैं. वरना

आज के मनुष्यों की चेतना को देखते हुए मैं अपने अनुभवों के आधार पर यह कह सकता हूँ कि आज की मनुष्यता में ना सिर्फ धरती को स्वर्ग बनाने की क्षमता है, बल्कि आज की यह मनुष्यता ब्रह्मांड पर राज करने का हौसला भी रखती है. सो, बातों पर अंधा विश्वास न करना एक श्रेष्ठ गुण है. हवाई बातों से अपने को दूर रखना आज के वैज्ञानिक युग के मनुष्य का कर्तव्य है. और मैं दावे से कहता हूँ कि जब विश्व के तमाम मनुष्य यह गुण अपना लेंगे तो पृथ्वी आसमान की ऊंचाइयां छू लेगी.

खैर, मैं वापस भारतीय सहिष्णुता के इतिहास पर लौट आता हूँ. और चूंकि बात मैं वैज्ञानिक युग के मनुष्यों से कर रहा हूँ, सो मुझे अपनी धरती की सहिष्णुता के सबूत भी देने ही होंगे. और इस बात का मैं एक महान उदाहरण दूं तो आज से करीब सात हजार वर्ष पूर्व "राम" करके एक व्यक्ति अयोध्या नगरी में पैदा हुआ था. वह जीते जी भी सबका लाड़ला था, और आज तो वह करोड़ों लोगों द्वारा भगवान की तरह पूजा भी जाता है. मैं आज तुमको उसके जीवन की एक घटना बताता हूँ. वह अपनी पत्नी सीता से बेहद प्यार करता था. लेकिन एकदिन ऐसा हुआ कि रावण नामक एक शक्तिशाली व्यक्ति की खराब नजर सीता की खूबसूरती पर पड़ी और उसने उसका अपहरण कर लिया. खैर, राम ने अपनी पत्नी को उसके शिकंजे से छुड़वाने हेतु जी-जान लगा दी और अंततः अपने शौर्य व दृढ़ इरादों की बदौलत उसने अपनी प्यारी पत्नी सीता को उसकी कैद से आजाद भी करवा लिया. हालांकि यह कार्य आसानी से नहीं निपटा, इस हेतु उसे अति शक्तिशाली रावण से एक महायुद्ध लड़ना पड़ा. ...और इसी युद्ध के दौरान उसके हाथों रावण बुरी तरह घायल हो गया. जहां तक रावण का सवाल है, वह स्वभाव से क्रूर जरूर था, परंतु साथ ही वह अति ज्ञानी व धार्मिक भी था. उसके व्यक्तित्व के इसी विरोधाभास ने उसे एक अलग ही पहचान उस समय भी दे रखी थी, और आज भी उसके व्यक्तित्व के इन दोनों स्वरूपों के आधार पर उसे अलग-अलग पहचान उपलब्ध है. जहां एक ओर उसके शैतानी मन के पुतले को उसकी मृत्यु के दिन दशहरा पर जलाया जाता है, वहीं अनेक जगहों पर उसके ज्ञानी हृदय की भगवान की तरह पूजा भी की जाती है.

सोचो मिस्टर ओबामा, मेरी संतानें इतनी सहिष्णु हैं कि एक व्यक्ति के कुकर्मी होने के बावजूद, उसके ज्ञान का ना सिर्फ सम्मान करती है बल्कि उस ज्ञान के कारण उसे भगवान की तरह पूजती भी है. और पूजते वक्त वह यह नहीं सोचती कि यह व्यक्ति वही है जिसने उनके लाड़ले राम की आदर्श पत्नी सीता का अपहरण कर उसपर जुल्म ढाए थे. ...यह तो ठीक पर इसके आगे की दास्तान उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है. राम ने अपनी पत्नी को छुड़वाने हेतु तथा लोगों को रावण के जुल्मों से छुटकारा दिलवाने हेतु भले ही रावण को बुरी तरह घायल कर दिया था, परंतु उसके बाद उसके प्रति अपने मन की सारी कटुता भुलाकर तत्क्षण घायल रावण के ज्ञान को हाथोंहाथ उसी जगह प्रणाम भी किया था.

आपको आश्चर्य होगा कि रावण ने अपनी अंतिम सांसें "अपने को प्रणाम करते हुए" राम को देखते हुए ली थी.

सो मिस्टर ओबामा, इसे कहते हैं सहिष्णुता. ऐसा एक उदाहरण कभी अपने इतिहास में बताना. मेरी संतानों को यहां आकर आपने जो कुछ नसीहत दी, अच्छी ही दी..! परंतु बेहतर होता यदि पहले थोड़ा पूरी दुनिया के सहिष्णुता के इतिहास में झांक लिया होता. वैसे आपके वक्तव्य ने मुझे बुरी तरह विचलित किया हो, ऐसा भी नहीं है. क्योंकि आपकी उम्र ही क्या है, और आपका अनुभव ही क्या है? मैं यह अच्छे से समझता हूँ कि यह एक व्यावहारिक चूक है, भावनात्मक कतई नहीं. निश्चित ही तुम एक ऐसी संतान हो, जिस पर आज विश्व की हर धरती को नाज है. तुमने अपने देश के प्रति तो अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया ही था, साथ ही सबसे शक्तिशाली राष्ट्र के राष्ट्राध्यक्ष होने के नाते विश्व के प्रति भी अपनी कई जिम्मेदारियों को तुमने बखूबी निभाया था. अत: मुझे तुमसे कोई विशेष शिकायत नहीं. तुमने जो कुछ कहा, कह दिया. कोई खास बात नहीं. परंतु सच कहूं तो मुझे असल वेदना तो इस बात से पहुंची है कि मेरी धरती की संतानों ने अपने असहिष्णु होने की बात किसी के मुख से सुन कैसे ली? किसी ने इसका हाथोंहाथ मुंहतोड़ जवाब क्यों नहीं दिया? मेरी एक भी संतान की छाती छप्पन इंच की क्यों नहीं निकली? और जहां तक तुम्हारा सवाल है मिस्टर ओबामा, तो तुम इसे मेरे द्वारा बात शुरू करने के एक खूबसूरत बहाने के तौर पर ले सकते हो. अत: तुम्हें इसमें बुरा मानने की कोई आवश्यकता नहीं. और फिर मैं बात भी तो सीधी, स्पष्ट व सत्य ही कह रहा हूँ. मैं कोई भी बात यूं ही कहने से रहा. आखिर मैं एक विशाल हृदय धरती हूँ. और फिर यदि मैं ओबामा की बात को खेलदिली से ले रहा हूँ, तो मेरी बात को तो वैसे ही किसी को अन्यथा नहीं लेनी चाहिए. मेरी भावना किसी को चोट पहुंचाने की या नीचा दिखाने की हो ही नहीं सकती है. मैं तो जब भी और जो भी कहूंगा, मनुष्यता के उद्धार हेतु ही कहूंगा.

सो, वापस मैं मुख्य मुद्दे पर लौट आऊं. तथा मुख्य मुद्दा यही कि असहिष्णुता के नाम पर मेरी संतानों पे हमला हुआ है. और वह भी सबसे शक्तिशाली राष्ट्र के राष्ट्राध्यक्ष द्वारा. और कमाल यह कि सबसे सहिष्णु धरती को सहिष्णुता के नाम पर नसीहत दी गई है. अब संतानें भले ही चुप रह गई, परंतु ऐसे में मेरे तो चुप बैठने का सवाल ही नहीं उठता है. मुझे तो मेरे अनुभवों का सत्य उजागर करना ही रहा. मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मैं कोई भी बात ऐसे ही नहीं कहता हूँ. वैज्ञानिक युग में प्रकट हुआ हूँ तो सबूतों की भाषा बोलना भी अच्छे से जानता हूँ. और सबूत के तौरपर कहूं तो जीसस क्राइस्ट का नाम तो आपने सुना ही होगा. हां, वही जिनके पीछे पूरी क्रिश्चियनिटी की स्थापना हुई है. जो आज की तारीख में विश्व में सर्वाधिक पूजे जानेवाले देवताओं में से एक हैं. लेकिन यह तो आज की बात हुई. और किसी की मृत्यु के बाद उसके साथ क्या किया जाता है, इसका सहिष्णुता से कोई खास ताल्लुक नहीं. उसकी कोई बहुत ज्यादा कीमत भी नहीं. जीते-जी

यदि किसी ने अपने माता-पिता या दादा-दादी की तरफ देखा न हो, उनकी सेवा न की हो...और मृत्यु पश्चात उनके नाम पर दान दे या उनके चर्च बनवाए; या भारतीय परंपरानुसार उनका श्राद्ध मनाए, उसकी कीमत क्या? उसमें प्यार कहां झलकता है? यह नाटक उनके मृत माता-पिता या दादा-दादी को सुकून कहां पहुंचा सकता है? कहने का तात्पर्य यह कि आज जीसस क्राइस्ट के साथ क्या किया जा रहा है, उसमें मैं पड़ना नहीं चाहता. मैं ऊपरी या छिछोरी बात करने के बजाए व्यावहारिक और स्तरीय बात करने में विश्वास करता हूँ. तथा वही करने और समझाने की कोशिश कर रहा हूँ.

सो, अभी तो सीधे-सीधे मुझे यह बताओ कि जीसस कौन थे? उनका गुनाह क्या था? ऐसा तो उन्होंने क्या कर लिया था कि उनको सूली पर लटकाया जाना जरूरी हो गया था? ऐसा तो क्या हो गया था कि उनके बदन पर कीलें ठोकते-ठोकते उन्हें बेदर्दी से तड़पा-तड़पा कर मारना जरूरी हो गया था? अरे, जीसस तो एक अति प्यारे, भोले, ज्ञानी तथा करुणावान व्यक्ति थे. वे उन चन्द महान संतानों में से थे जिस पर कोई भी धरती करोड़ों वर्ष नाज कर सकती है. जीसस ज्ञान व प्यार ही तो बांट रहे थे. सत्य ही तो कह रहे थे. पाखंड व शोषण के खिलाफ आवाज ही तो उठा रहे थे. माना, बात उस समय की व्यवस्था तथा मान्यताओं के खिलाफ जा रही थी, तो भी क्या हुआ? अच्छे का स्वागत तो होना ही चाहिए. चलो इतने सहिष्णु नहीं, स्वागत नहीं कर सकते...तो भी कोई बात नहीं. ठीक है, यदि बात समझ में नहीं आती तो उपेक्षा कर लो, परंतु यह तड़पा-तड़पा कर सूली पर लटका देना!

आखिर क्राइस्ट कह ही क्या रहे थे? यही न कि मैं ईश्वर की संतान हूँ. आप सबके लिए उसका संदेश लाया हूँ. वे यही तो कह रहे थे कि मेरा विश्वास जानो; ईश्वर बिना भेद-भाव के सबको बराबरी पर प्यार करता है. उसके आशीर्वाद पाने हेतु धन या समय का व्यय करने की कोई आवश्यकता नहीं. ईश्वर के आशीर्वाद पाने हेतु मीडिएटर यानी बिचौलियों की जरूरत नहीं. अब इन सारी बातों में उनकी कौन-सी कही बात गलत थी? एक भी नहीं. परंतु क्या करें...? जीसस की सच्ची बातें बिचौलियों, यानी कहा जा सकता है कि उस समय के पादरियों को रास नहीं आई, और चढ़ा दिया उन्हीं की धरती की एक महान संतान को सूली पर. मार डाला अपनी ही धरती के महानतम चांद को. ...क्या इसे सहिष्णुता कहोगे? नहीं.... निश्चित ही जीसस के साथ किए गए व्यवहार ने असहिष्णुता की सारी सीमाएं पार कर ही ली थी. तो फिर आपने भारतवासियों को सहिष्णुता का पाठ पढ़ाने से पूर्व उन लोगों को सहिष्णुता का पाठ क्यों नहीं पढ़ाया जिन्होंने जीसस के साथ ऐसा व्यवहार किया? और जहां तक मेरी धरती के संतानों की बात है, तो मेरी धरती का तो बच्चा-बच्चा सुबह-शाम यह सिर्फ कहता ही नहीं, मानता भी है कि वह ईश्वर की संतान है. सो मेरी धरती व उसके संतानों की कम-से-कम धार्मिक सहिष्णुता के मामले में तुलना कभी नहीं करी जा सकती है. और यह बात मैं ऐसे ही नहीं कह रहा, यहां के इतिहास का हर पन्ना चिल्ला-चिल्लाकर मेरी इस बात की गवाही देता है. इस बात को समझाऊं तो, वैसे कहने

को तो भारत हमेशा से हिंदू धर्म में मानते आनेवाला देश है. लेकिन यहां हर युग में हिंदू धर्म के पाखंडों तथा उसकी गलत मान्यताओं और विचारों पर हमले करनेवाले लोग आए हैं, और उन्होंने हमले किए भी हैं; लेकिन यहां किसी के साथ ऐसा कभी कुछ नहीं हुआ जो जीसस क्राइस्ट के साथ हुआ.

हालांकि मुझे मालूम है कि आप ऐसे नहीं मानेंगे. तो चलो, मैं चन्द उदाहरण देता हूँ. मेरी धरती पर एक संतान पैदा हुई थी, कृष्ण. और सच कहूं तो वह मेरी सबसे प्यारी, ज्ञानी व पूर्ण संतान थी. कृष्ण बचपन से ही प्रज्ञावान था. और आप मानेंगे नहीं ओबामा कि जब उसकी उम्र बमुश्किल 12 वर्ष थी, उसने उस समय की सबसे प्रचलित परंपरा 'इन्द्रपूजा' का विरोध किया था. 'इन्द्र' उस समय वर्षा का देवता माना जाता था. मान्यता यह थी कि उसकी पूजा करेंगे तो ही वर्षा होगी. अब प्रज्ञावान कृष्ण को यह बात कहां समझ में आनेवाली थी? उनका चिंतन यह कहता था कि वर्षा, जो कुदरत की देन है, जो उसके नियमों के अधीन है; भला उसका भी कोई देवता हो सकता है? और चलो है भी तो क्या? देवता तो स्वभाव से करुणावान होते हैं. सो उसे तो हर जगह, हर वर्ष, अच्छी वर्षा देनी ही चाहिए. कोई देवता हो और ऐसा सोचे कि मेरी चापलूसी करोगे तो ही वर्षा मिलेगी, मेरी पूजा नहीं करोगे तो वर्षा भेजूंगा ही नहीं; तो फिर ऐसी सोच का व्यक्ति चाहे जो हो, देवता तो हो ही नहीं सकता है. अत: हरहाल में इन्द्रपूजा नहीं की जानी चाहिए. बस उसने उस छोटी-सी उम्र में इन्द्रपूजा के खिलाफ माहौल खड़ा किया व इन्द्रपूजा रुकवा दी. और आप जानते हैं कि युगों से चली आ रही परंपरा के खिलाफ खड़े होनेवाले "कृष्ण" के साथ मेरी संतानों ने क्या किया? उनका भरपूर साथ दिया.

इसी शृंखला में एक और उदाहरण दूं तो गौतम बुद्ध का नाम भी आपने सुना ही होगा. उन्हें आज की तारीख में भगवान की तरह पूजने वालों की तादाद कोई कम तो है नहीं. आपको न मालूम हो तो बता दूं, उन्होंने भी आज से करीब पच्चीस सौ वर्ष पूर्व मेरी धरती पर ही जन्म लिया था. खैर, यह कोई खास बात नहीं, परंतु खास बात यह कि जैसे जीसस ने उस समय की एकमात्र प्रचलित यहूदी परंपरा के पाखंडों का विरोध किया था, वैसे ही बुद्ध ने अपने समय की एकमात्र प्रचलित हिंदू परंपरा के पाखंडों का पुरजोर विरोध किया था. अब बाहर से देखने पर तो दोनों बातें एक ही लगती हैं, और काफी हद तक एक हैं भी. ...परंतु फर्क धरती की अन्य संतानों द्वारा उनके साथ किए गए व्यवहार का है. जहां अन्य धरती की संतानों ने जीसस क्राइस्ट को सूली पर लटकाया, वहीं मेरी धरती की संतानों ने अपनी मान्यता तथा पाखंडों के खिलाफ बोलनेवाले बुद्ध को भगवान का दर्जा दिया. जहां जीते-जी जीसस के साथ बमुश्किल उंगलियों पर गिने जा सके, उतने शिष्य थे, वहीं हिंदू पाखंडों के खिलाफ खड़े होने के बावजूद बुद्ध के साथ धीरे-धीरेकर आधा भारत जुड़ गया था. बुद्ध के जीते-जी लाखों लोगों ने हिंदू धर्म छोड़कर बौद्ध धर्म अपनाया था. उस समय के

बड़े-बड़े राजा-महाराजा उनके प्रभाव में आए थे. और आज भी मेरी धरती पर मेरी संतानें बुद्ध को पूजती हैं. समझ में आया मिस्टर ओबामा, यह होती है सहिष्णुता.

और यह मत समझना कि ये सारे किस्से अपवाद हैं. नहीं, यहां तो हर सदी में कई ऐसे ज्ञानी लोग पैदा होते ही रहे हैं जिन्होंने अपने समय के धार्मिक पाखंडों तथा सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज बुलंद करी थी. हां कुछ नासमझ, स्वार्थी तथा कट्टर लोगों के द्वारा उनका विरोध भी होता रहा है, उन्हें सताया भी जाता रहा है, परंतु उन्हें मारा कभी नहीं गया. विशेष बात यह कि ऐसे लोगों को सतानेवालों से उनका सम्मान करनेवालों की तादाद हमेशा से ज्यादा रही है, और वह भी उनके जीते-जी. मैं यह नहीं कह रहा कि मेरी धरती पर बुद्ध का विरोध नहीं हुआ. हुआ, और खासकर पंडितों द्वारा बहुत विरोध हुआ. कई बार जीते-जी उनका अपमान भी हुआ. अब इतना तो आप जानते ही हैं कि पंडित हों, पादरी हों या मौलवी हों; इनकी दुकानें ही पाखंडों पर टिकी होती हैं. सो जब कोई पाखंड का विरोध करता है तो इन्हें लगता है कि कोई उनकी आसरे-आश्वासनों तथा पाखंडों के मायाजाल से फैलाई हुई दुकानों पर हमला कर रहा है. कोई उनकी जमीजमाई दुकानों को हिलाने की कोशिश कर रहा है. ...और बस वे उस व्यक्ति के पीछे पड़ जाते हैं. होगा, उनकी वे जानें. वैसे भी धरती चाहे कोई भी हो, आज के महान वैज्ञानिक युग में इन पाखंडियों की पकड़ वैसे ही ढीली पड़ गई है. सो, मेरी तथा तुम्हारी चल रही इस महान व ऐतिहासिक बातचीत में इन पाखंडियों को विशेष तवज्जो देना ही क्यों?

खैर, अब इसी शृंखला में आगे जो बात मैं बताने जा रहा हूँ वह आज से करीब छः सौ वर्ष पूर्व की है. उस वक्त मेरी धरती पर एक प्यारे इन्सान कबीर ने जन्म लिया था. सच कहूं तो मैंने इतने वर्षों के इतिहास में अरबों संतानें देखी हैं, पर उस जैसा...! वह अपने तरीके का इकलौता ही था. कितना भोला व सरल. खैर, कबीर का इतिहास कहूं तो वह हिंदू था या मुसलमान, यह किसी को नहीं पता था. और-तो-और, वे स्वयं भी यह नहीं जानते थे कि वे हिंदू हैं या मुसलमान? यूं भी उन्हें यह जानने में कोई दिलचस्पी भी नहीं थी. ...क्योंकि वे सच्चे भी थे और ज्ञानी भी. और इतनी बात तो तुम जानते ही होगे कि ज्ञानी सिर्फ इन्सान होता है. इंटेलिजेन्ट को भला "धर्म-जात" का भेद कहां? होगा, अभी तो कबीर की बात आगे बढ़ाते हुए यह बता दूं कि उस समय भारत में दो ही प्रमुख मान्यताएं थी, एक हिंदू तथा दूसरी मुस्लिम. अब पाखंड और संप्रदाय का तो चोली-दामन का साथ होता है, यह आप जानते ही हैं. और कबीर चूंकि ज्ञानी थे तो स्वाभाविक रूप से वे दोनों संप्रदायों में प्रचलित धार्मिक पाखंडों के खिलाफ थे. आप मानेंगे नहीं मिस्टर ओबामा कि कबीर उस बनारस नामक शहर में रहते थे, जो उन दिनों भी कट्टर धार्मिक नगरी कही जाती थी. तथा वह आज भी अपनी धार्मिक जड़ों व मान्यताओं के कारण जानी जाती है. ऐसे धार्मिक कट्टरों के बीच में कबीर ने उनकी मान्यताओं के पाखंडों पर प्रहार करते हुए हजारों दोहे कहे. और सब-के-सब सटीक व महान. इतना ही नहीं, कई तो दोनों धर्मों तथा उनकी

गलत व पाखंडी मान्यताओं पर बड़े ही करारे हमले थे. उनमें से चन्द मैं आपको बताता हूँ, शायद सुनकर आपके भी रोंगटे खड़े हो जाएं....

A) पत्थर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहाड़.
इससे तो चक्की भली, पीस खावे संसार..

B) पंडित मौलवी हिजड़ा, इनसे भक्ति न होय.
भक्ति करे कोई सूरमा, जो शब्द विवेकी होय..

C) कांकर-पाथर चूनि के, मस्जिद लिया चिनाय.
तापर मुल्ला बांग दे, क्या बहरा भया खुदाय..

अब बताएं. ऐसे दोहे और वह भी आज से करीब छः सौ वर्ष पूर्व, तथा वह भी धार्मिक कट्टरता से ग्रस्त शहर में! तो क्या मेरी संतानों ने उसे मार डाला? नहीं, आपको सुनकर आश्चर्य होगा मिस्टर ओबामा कि लोगों ने उन्हें सर-आंखों पर बिठाया. वे आज भगवान की तरह पूजे जाते हैं. यही नहीं, यदि कहूं कि वे आज के भारत की धड़कन हैं, तो भी गलत नहीं होगा. न जाने कितनी म्यूजिक कंपनी ने कितने गायकों के साथ उनके दोहों के अलबम निकाले हैं. और वे सब-के-सब हमेशा बेस्ट सेलर रहे हैं. भारत में ऐसा व्यक्ति खोजना मुश्किल है जो उनके दोहे न गुनगुनाता हो. सोचो, हिंदू तथा मुसलमान दोनों की मान्यताओं, परंपराओं तथा पाखंडों पर हमला करने के बावजूद उनके खिलाफ कभी कोई आवाज यहां नहीं उठती. ...इसे कहते हैं सहिष्णुता.

यही क्यों! एक और किस्सा सुनाता हूँ. मेरी धरती पर एक संतान पैदा हुई थी दयानंद सरस्वती. वे जब चौदह वर्ष के थे तो उनके पिता उन्हें अपने साथ शिव के मंदिर ले गए थे. हिंदुओं में मूर्ति को लड्डू चढ़ाने की पुरानी परंपरा रही है. बस उसी परंपरानुसार लोग-बाग उस समय भी मंदिर में मूर्ति को लड्डू चढ़ा रहे थे. उसी दरम्यान दयानंद ने देखा कि चूहे मूर्ति को चढ़ाये लड्डू बड़े मजे से खाये जा रहे हैं. यह देख आश्चर्यचकित दयानंद ने अपने पिताजी से एक बड़ा ही सीधा सवाल किया- यह लड्डू किसको चढ़ाये गए हैं?

पिताजी ने कहा - भगवान को.

इस पर दयानंद ने कहा- तब तो चूहे उनका हक छीन रहे हैं. अब तो वे निश्चित ही क्रोधित होकर चूहे को ठीक कर देंगे.

पिताजी ने कहा - नहीं, ऐसा कुछ नहीं होनेवाला.

दयानंद ने पूछा-क्यों? क्या उनमें शक्ति नहीं? ...पिताजी की तो एक चुप, सौ चुप. अब पिताजी भले ही चुप हो गए लेकिन दयानंद समझ गए कि बाकी पत्थरों की तरह यह भी सिवाय एक पत्थर के और कुछ नहीं. बस हाथोंहाथ दयानंद को भारत की सबसे लोकप्रिय मान्यता ‘‘मूर्ति-पूजा’’ की व्यर्थता समझ में आ गई. फिर क्या था, बड़े होते-होते

उन्होंने मूर्तिपूजा के विरोध में आवाज बुलंद कर दी. और फिर तो देखते-ही-देखते उन्होंने मूर्तिपूजा के खिलाफ एक आंदोलन भी छेड़ दिया. कहते हैं कि उन्होंने अपने ही हाथों अनेक मूर्तियों को नुकसान भी पहुंचाया. जानते हो, मेरी संतानों ने उनके साथ क्या किया? उन्हें सर आंखों पर बिठाया. उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज भारत के गांव-गांव में फैल गए और वे आज भी भारत के हर शहर की शोभा बढ़ा रहे हैं. यहां तक कि भारत में शादी रीति-रिवाज से की गई हो या कोर्ट में रजिस्टर करी गई हो, तब तो मान्य है ही; परंतु वैसे ही यदि कोई शादी आर्यसमाज में करी गई हो तो भी उसे वैधानिक विवाह का दर्जा दिया जाता है. यह सम्मान मेरी संतानों ने उस व्यक्ति द्वारा स्थापित आर्यसमाज को दिया है, जिन्होंने उनकी सर्वाधिक मान्य परंपरा की व्यर्थता को उजागर किया. ...तो उम्मीद करता हूँ कि मेरी संतानों की सहिष्णुता का इतिहास तुम्हारी समझ में आ गया होगा. तुम्हारी समझ में यह आ ही गया होगा कि मेरी धरती कितनी सहिष्णु है.

खैर, अब एक नजर पश्चिमी असहिष्णुता पर घुमा लेते हैं. आप जानते ही होंगे कि ऐथेंस की धरती पर सोक्रेटिज नामक एक व्यक्ति पैदा हुआ था. साथ ही आप यह भी जानते ही होंगे कि उसे जहर चाटने की सजा देकर मार दिया गया था. बताइए भला क्यों? इसके लिए पश्चिमी संस्कृति की धार्मिक कट्टरता और असहिष्णुता के सिवाय और किसे जिम्मेदार ठहराया जा सकता है? क्योंकि सोक्रेटिज जैसी संतान, एक ऐसा ज्ञानी कि जिस पर कोई भी धरती नाज करे; उसे मार डाला गया! अब वे लोगों को सच्ची राह ही तो दिखा रहे थे. और तुम जानते ही हो कि लोगों को सच्ची राह दिखाने हेतु गलत मान्यताओं पर प्रहार तो करना ही पड़ता है. ...बस वही तो वे कर रहे थे, तथा वह भी ठीक तरीके से. कबीर या दयानंद की तरह उन्होंने कोई करारी भाषा या कड़े व्यवहार का उपयोग तो किया नहीं था. उन्होंने न तो कबीर जैसे कटु-सत्य दर्शाने वाले दोहे ही कहे थे, और ना तो वहां के देवस्थानों को ही हानि पहुंचाई थी. उन्होंने तो बस चन्द गलत मान्यताओं का विरोध किया था. फिर भी उन्हें जहर चाटने की सजा देकर मार डाला गया. और शायद आपने न पढ़ा हो तो वह पूरा किस्सा मैं आपको बताता हूँ. शायद इससे आपको किस प्रकार के व्यक्ति के साथ क्या किया गया था, यह समझ में आ जाएगा.

सोक्रेटीज को बात-बे-बात लोगों से चर्चा करने और उन्हें समझाने का बड़ा शौक था. वे ज्ञानी भी थे, और बात भी पक्की करते थे. तथा चूंकि उनकी बातों में सच्चाई होती थी, अतः स्वाभाविक तौर पर वे प्रचलित गलत मान्यताओं के खिलाफ भी जाती थी. बस इससे धीरे-धीरेकर धर्माचारी और शासक, दोनों उनसे भड़क गए. उन्हें ऐसी बातें न करने हेतु काफी समझाया भी गया, परंतु वे अपनी आदतों से बाज नहीं आए. आखिर कोई चारा न देख उन्हें गिरफ्तार कर अदालत में पेश कर दिया गया. अब सोक्रेटिज जैसे मुंहफट को कटघरे में खड़ा हुआ कौन नहीं देखना चाहता? सो स्वाभाविक तौर पर अदालत में काफी भीड़ एकत्रित हो गई. उधर अदालती कार्रवाई के प्रारंभ में शासक पक्ष की ओर से उनपर

लगे सारे आरोप पढ़े गए. आरोप स्पष्ट थे कि सोक्रेटिज प्रचलित परंपरा के खिलाफ लोगों को भड़काते हैं, और वह भी जबरदस्ती पकड़-पकड़कर. यह सुनते ही जज का पारा चढ़ गया, क्योंकि वह स्वयं प्रचलित परंपरा के कट्टर अनुयायी थे. इसके अलावा वे सोक्रेटिज की हरकतों से काफी-कुछ वाकिफ भी थे. इस कारण उन्हें सोक्रेटिज से कुछ नाराजी पहले से ही थी. अतः आरोप सुनाने की ही देर थी कि वे भड़क गए. और भड़कते ही बड़ी कड़क आवाज में उन्होंने सोक्रेटिज से पूछा- क्या तुम अपने पर लगाए तमाम आरोप स्वीकारते हो?

सोक्रेटिज ने हंसते हुए कहा- जी हुजूर.

जज ने कहा- ठीक है! अब तक जो हुआ सो हुआ. तुम्हारी उन सब गलतियों को नजरअंदाज किया भी जा सकता है यदि तुम यह आश्वासन दो कि आज के बाद अपनी हरकतों से बाज आ जाओगे.

सोक्रेटिज कहां बदलने वाले थे? उनका तो मकसद ही अंधकार से लोगों को छुटकारा दिलवाना था. सो उन्होंने बड़ी विनम्रतापूर्वक जज से कहा- हुजूर, मुझे नहीं लगता कि मैं बदल पाऊंगा!

जज ने कहा- सोच लो, यदि तुमने आश्वासन नहीं दिया तो मैं तुम्हें जहर चाटने का हुक्म दे दूंगा.

सोक्रेटिज ने कहा- इसमें सोचना क्या है? मैं नहीं बदलने वाला यह तय है. वहीं आप भी अपने विवेक से निणर्य लेने को स्वतंत्र ही हैं.

...बस क्रोधित जज ने उन्हें जहर चाटने की सजा सुना दी. सजा सुनाते ही सोक्रेटिज को पकड़कर हवालात में बंद कर दिया गया. उनके कुछ शिष्यों और शुभेच्छुओं को छोड़ दिया जाए तो चारों ओर उत्साह का माहौल हो गया. दूसरी ओर सोक्रेटिज के शिष्य बड़े दुःखी और चिंतित थे. वे अपना दुःख जाहिर करने या कहूं कि अपना गम कम करने अपने गुरु सोक्रेटिज से मिलने नियमित रूप से जाया करते थे. और वे यह देख आश्चर्यचकित रह जाते थे कि सोक्रेटिज के चेहरे पर सजा का कोई असर नहीं था. उल्टा वे सबको आश्वासन देते हुए कहते थे- पगलों, क्यों दुःखी होते हो? जहर देना उनके हाथ में है, परंतु मरना-नहीं-मरना तो मेरे हाथ में है. चिंता मत करो, उनके जहर देने के बावजूद मैं मरने वाला नहीं.

खैर, सोक्रेटिज की इस बात से शिष्य आश्वस्त तो नहीं हो रहे थे; परंतु सोक्रेटिज से इससे ज्यादा बहस करना भी बेकार था. और फिर जहर चाटने की सजा दिए जाने के बावजूद सोक्रेटिज के चेहरे की शांति उन्हें अन्यथा भी सोचने पर मजबूर तो कर ही रही थी. ...बस इसी असमंजस व चिंताओं के बीच उनके शिष्यों का समय कट रहा था. ...और इधर देखते-ही-देखते सोक्रेटिज के जहर चाटने का दिन भी आ गया. निश्चित ही उनके काफी शिष्य इस अंतिम घड़ी में उनके आसपास एकत्रित हो गए. कई रो भी रहे थे. लेकिन इन

सबके विपरीत सोक्रेटिज तो ना सिर्फ उत्साह से भरे थे, बल्कि जहर चाटने हेतु उतावले भी हो रहे थे. उन्हें पूरा विश्वास था कि जहर उन्हें नहीं मार सकता है. इधर जहर घोलने वाला भी ऐसे वक्त सोक्रेटिज पर छायी मस्ती देखकर दंग रह गया था. यही नहीं, उसे ऐसे मस्त व्यक्ति को जहर चाटने की सजा दिए जाने का दुःख भी पकड़ लिया था. अब वह इसमें ज्यादा तो कुछ नहीं कर सकता था, परंतु जहर बड़े आराम से घोलने लग गया था. इरादा साफ था कि सोक्रेटिज जितना और जी लें. इधर सोक्रेटिज भी कम न थे. वे जहर घोलनेवाले के इरादे और भावना दोनों ताड़ गए थे. वे जहर पीने को उतावले तो इतने थे कि उनसे एक क्षण की देरी बर्दाश्त नहीं हो रही थी. उन्होंने जहर घोलने वाले से कहा भी कि...तू क्यों समय बिगाड़ रहा है? क्यों दुःखी हो रहा है? तू तो मुझे जहर चटा नहीं रहा, मुझे जहर तो परंपराओं के पिछल्लू दे रहे हैं. तू तो अपना कर्तव्य निभा रहा है. अतः तू अपना कर्म ईमानदारी से कर और जल्दी जहर घोलकर मुझे चटा दे.

आखिर जहर घुल भी गया और जहर घोलने वाले ने बड़े दुःखी मन से सोक्रेटिज को जहर चटा भी दिया. जहर बड़ा ही स्ट्रांग था, और उसने वाकई तेजी से असर दिखाना शुरू भी कर दिया. जैसे ही जहर उनके पांव पर चढ़ा कि उसने पांव सुन्न कर दिए. पर सोक्रेटिज को इससे कहां फर्क पड़ना था? उन्होंने तो इसपर भी अपने निराले अंदाज में कहा- मेरे पांव सुन्न हो गए हैं, परंतु मैं पूरा-का-पूरा जीवित हूँ. उधर जहर अबतक हाथ व पेट में भी फैल चुका था. यह देख सोक्रेटिज बोले कि जहर सत्तर प्रतिशत शरीर खराब कर चुका है, पर मैं पूरा-का-पूरा जीवित हूँ. आखिर जहर उनके दिलो-दिमाग पर चढ़ गया. वे पूरी तरह सुन्न हो गए. और उनके अंतिम शब्द थे- सुनो दुनियावालों, जहर करीब-करीब मेरा सौ प्रतिशत शरीर खत्म कर चुका है...परंतु मैं पूरी तरह वैसा-का-वैसा हूँ. यानी मृत्यु से बड़ा कोई असत्य नहीं है. ...बस इन शब्दों के साथ ही उन्होंने प्राण त्यागे.

...अब बताओ मिस्टर ओबामा, क्या हंसते हुए इस तरह जहर चाटनेवाला और अपनी जान देकर दुनिया को मृत्यु का सत्य बतानेवाला, गलत हो सकता है? फिर भी उसे क्या दिया, मौत की सजा! यह...असहिष्णुता है. और यह मत कह देना कि यह सब पुरानी बातें हैं. मैं अभी के चन्द उदाहरण देता हूँ. वैज्ञानिक या आर्थिक प्रगति कर लेने से सहिष्णुता जैसा महान मानवीय गुण नहीं आ जाता है. खासकर धार्मिक असहिष्णुता का तो आज भी पश्चिमी देशों में साम्राज्य है. इसका एक बड़ा ही सीधा उदाहरण देता हूँ. आपको मालूम होगा कि 31 जनवरी 2013 को अमेरिका के एक मशहूर सरकारी वकील पेट्रीक फिट्जेराल्ड ने सोक्रेटिज पर एक नकली मुकदमा फिर चलाया. सिर्फ यह जानने, समझने व समझाने के लिए कि सोक्रेटिज को मौत की सजा देना, गलत था या सही? और आश्चर्यजनक रूप से इस नकली प्रक्रिया में सोक्रेटिज को फिर एक बार दोषी ठहराया गया. प्रक्रिया में दो वकीलों पेट्रिक फिट्जेराल्ड तथा पेट्रिक कोलिन्स ने सरकारी वकील के तौरपर सोक्रेटिज के खिलाफ केस की पैरवी की. सोक्रेटिज का डिफेन्स डेन वेब तथा रॉबर्ट

क्लीफोर्ड ने किया. इस केस में तीन जजों की बेंच थी, जिनके नाम थे... रिचार्ड पोसनर, विलियम बऊर तथा एना डेमाकोपोलस. और जजों का फैसला 2-1 से सोक्रेटिज के खिलाफ गया. चौदह अन्य प्रतिष्ठित न्यायविदों को भी आमंत्रित किया गया था. उनका फैसला भी 7-7 की बराबरी पर रहा. और मजा तो यह कि इसके बाद वहां उपस्थित 840 अन्य लोगों की राय भी ली गई. उनकी राय जानने हेतु उन सभी को सफेद और नीले रंग के चिप दिए गए. सफेद का अर्थ था निर्दोष, जबकि नीले का अर्थ था कि सोक्रेटिज दोषी है. जब एक बैग में इन चिपों को जमा करने के बाद उन बैगों का वजन किया गया तो नीले बैग का वजन ज्यादा निकला. यानी हर स्तर पर राय सोक्रेटिज के खिलाफ रही. खैर, सरकारी वकीलों ने सोक्रेटिज को दोषी ठहराने हेतु जो चन्द दलीलें रखी थीं, वे भी कम दिलचस्प नहीं थी. उनमें से चन्द दलीलों की चर्चा करूं तो वे कुछ इस प्रकार थी:

(1) सरकारी वकीलों का कहना था कि सोक्रेटिज चाहे जो हो जाए, समझौता करने को तैयार नहीं थे. अब इस सरकारी वकील को कौन समझाए कि समझौता वह करे, जिसे असत्य में जीना हो. समझौता वह करे जो मौत से डरता हो. भला क्राइस्ट और सोक्रेटिज समझौता करेंगे? और फिर सत्य की राह पर चलनेवाला समझौता करे भी तो क्यों?

(2) मुकदमें में आगे करी गई दलीलों के आधार पर सोक्रेटिज को एथेंस की युवा पीढ़ी को भड़काने के आरोप में भी दोषी पाया गया.

(3) ...यही क्यों, तमाम दलीलों के अंत में सोक्रेटिज पर यह आरोप भी सिद्ध हो गया कि उन्होंने ग्रीस के भगवानों का मजाक उड़ाया था. यानी एक नहीं, सभी अपराधों में उन्हें इस मुकदमे में एकबार फिर दोषी पाया गया. और वह भी सबके द्वारा, तथा सब स्तर पे.

खैर, अभी तो मुकदमे की चर्चा आगे बढ़ाऊं तो इस नकली अदालत में चल रही दलीलों के दौरान एथेंस के समर्थन में बोलनेवाले एक वकील ने सोक्रेटिज की मृत्यु को जायज ठहराते हुए एक बड़ी ही दिलचस्प दलील दी. उस वकील ने कहा कि "सोक्रेटिज ने ईश्वर का अपमान करते हुए चंद्रमा को कचरा कहा था. और ईश्वर से उलझने वालों का तो यही अंजाम होना चाहिए. यूं भी भला ईश्वर किसी भी बात को भूलते थोड़े ही हैं, ईश्वर तो हर बात का बदला लेते हैं." और यह सारी बातें किसी सामान्य बुद्धि के व्यक्ति या धर्म के पिछल्लू पादरियों ने नहीं, बल्कि आपके यहां के विचारशील समझे जानेवाले एक वकील ने की थी. अब बताओ, आपकी धरती ने ईश्वर की ऐसी तो कैसी कल्पना करी है कि वह बदला लेता है? अब उन्हें कौन समझाए कि इन्सान तक तो ठीक, पर क्या भगवान भी इतना असहिष्णु हो सकता है? जरा सोचो, थोड़ा चिंतन करो. अपने व समान मान्यता के

देशवासियों को सहिष्णुता के असली सबक सिखाओ. यूं भी एक राष्ट्राध्यक्ष होने के नाते यह तुम्हारी पहली जिम्मेदारी थी. अत: बेहतर तो यही है कि आपने जो नसीहत मेरी धरतीवालों को दी है, वह अपने तथा अपने आसपास के लोगों को दें. उन्हें सहिष्णुता की नसीहत की ज्यादा आवश्यकता है. ...खासकर धार्मिक सहिष्णुता की. जरा सोचो मिस्टर ओबामा कि चौबीस सौ वर्षों में दुनिया कितनी बदल चुकी है. बैलगाड़ी व घोड़ेगाड़ी से उठकर मनुष्य हवाईजहाज व रॉकेट के भरोसे चांद-तारों पर पहुंच गया है. हालांकि निश्चित ही इस सारे विकास में आपकी व आपके आसपास की धरती का विशेष योगदान है. परंतु बात अभी सहिष्णुता की चल रही है. और मुझे दु:ख के साथ कहना पड़ रहा है कि धार्मिक सहिष्णुता के मामले में आपकी व आपके आसपास की धरती ने चौबीस सौ वर्ष बीत जाने के बाद भी कोई प्रगति नहीं की.

चलो एक और किस्सा सुनाता हूँ, जिससे शायद बात पूरी तरह से आपकी समझ में आ जाए. यह इतिहास का किस्सा है व ऐतिहासिक भी. महान गैलिलियो का नाम भी आपने सुना ही होगा. उन्होंने क्या किया? सोलहवीं सदी में एक महान खोज करी तथा उसकी उद्घोषणा की. अब गैलिलियो ने तो जो जाना वही कहा था कि पृथ्वी... सूर्य के चक्कर लगा रही है. परंतु उन्हें क्या मालूम था कि इस सत्य की उद्घोषणा से उनकी जान पर बन आएगी. और जानते हैं, महान सत्य कहने के बावजूद उनकी जान पर क्यों बन आयी थी? क्योंकि बाइबल में लिखा है कि सूर्य 'पृथ्वी' के चक्कर लगा रहा है (ओल्ड टेस्टामेंट, इक्लिझियास्टिस, अध्याय-1, गॉस्पेल-5). अब वहां के लोगों की मान्यता में बाइबल तो गलत हो ही नहीं सकती. और गैलिलियो का कहना सीधे तौरपर बाइबल के खिलाफ था. सच तो यह है कि गैलिलियो के उजागर किए गए सत्य से बाइबल के पचास से ज्यादा गॉस्पेल असत्य साबित हो जाते थे. बस पादरियों को यह बर्दाश्त नहीं हुआ और उन्होंने हंगामा खड़ा कर दिया. सबसे पहले तो इन पादरियों ने वहां के शासक पर दबाव डालकर उनकी लोकप्रिय हो रही किताब 'डायलॉग्स' पर प्रतिबंध लगवा दिया. लेकिन जब बावजूद इसके आम जनता में गैलिलियो को लेकर उत्सुकता बनी रही, तो अंत में कोई उपाय न देख उन्हें अदालत तक घसीट कर ले जाया गया. मामला साफ था कि उनकी बात बाइबल के खिलाफ थी, और जो किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करी जा सकती थी. उधर जज स्वयं बड़ा धार्मिक और कट्टर ही नहीं, बल्कि बाइबल का बड़ा फॉलोवर भी था. और इधर पादरी भी अड़े ही हुए थे. सबकी एक ही मांग थी कि गैलिलियो अपने शब्द वापस ले और माफी मांगे. वहां अदालत के भीतर-बाहर भीड़-ही-भीड़ एकत्रित हो गई थी. और भीड़ हमेशा से असहिष्णु रही है. सो कहने की जरूरत नहीं कि उनमें से भी अधिकांश लोग गैलिलियो के विरुद्ध नारेबाजी पर उतारू थे.

खैर, इसी चल रही चिल्लाचपड़ व पादरियों की मांग के बीच अदालत की कार्रवाई प्रारंभ हुई. कार्रवाई के प्रारंभ में ही जज ने बड़ी कड़क भाषा में गैलिलियो से कहा- तुम

अपने शब्द वापस लो तथा सबसे माफी मांगो, वरना तुम्हें मौत की सजा दे दी जाएगी. जज की यह बात सुनते ही गैलिलियो ने चारों ओर निगाह दौड़ायी. गैलिलियो को समझते देर नहीं लगी कि पादरियों व कट्टरवादियों से भरी अदालत में माहौल वाकई क्रूरता की सारी सीमाएं लांघने को बेताब है. गैलिलियो को यह भांपते भी देर नहीं लगी कि यदि उसने जज की बात मानते हुए माफी न मांगी, तो सचमुच मौत की सजा सुना दी जाएगी. गैलिलियो समझदार था, वह सोक्रेटिज व क्राइस्ट के हश्र से वाकिफ भी था. उसने तुरंत दोनों हाथ जोड़ते हुए कहा- हुजूर! मैं अपने कहे की माफी मांगता हूँ. मैं अपनी वह बात वापस लेता हूँ जिसमें मैंने कहा था कि पृथ्वी...'सूर्य' के चक्कर लगा रही है. मैं मानता हूँ कि बाइबल में ठीक लिखा है, सूर्य ही 'पृथ्वी' के चक्कर लगा रहा है. यह सुनते ही चारों ओर खुशी की लहर दौड़ गई. अदालत का पूरा प्रांगण बाइबल की जयकार से गुंज उठा. उधर अपने शब्द वापस लेते ही गैलिलियो को छोड़ दिया गया. लेकिन गैलिलियो भी ...गैलिलियो था. उसने बाहर निकलते ही भीड़ से कहा- मैंने अपनी बात वापस अवश्य ली है, लेकिन मेरे बात वापस लेने से सूर्य चक्कर लगाना चालू नहीं कर देगा. सत्य तो यही है कि चक्कर पृथ्वी ही लगा रही है.

खैर, यह तो गैलिलियो समझदार था जो वक्त की नजाकत को भांप गया था. वरना शायद उसे भी मौत की सजा दे ही दी गई होती. सो, सौ बातों की एक बात यह कि आपके व आपके आसपास की धरती पर धार्मिक सहिष्णुता के किस्से काफी कम ही मिलते हैं. हां, सहिष्णुता की सूची में मुझे एक किस्सा अवश्य याद आ रहा है; जो ब्रिटेन के महान नागरिक स्टीफन हॉकिंग का है. यह किस्सा उस समय का है जब उन्होंने एक कॉन्फ्रेन्स को संबोधित करते वक्त गैलिलियो के साथ हुई ज्यादती का मुद्दा उठाया था. ...और इसी के चलते पोप जॉन पॉल द्वितीय ने ये कबूल किया कि चर्च ने गैलिलियो पर ज्यादती करके बड़ी भूल की थी. लेकिन यहां यह भी स्पष्ट कर दूं कि यह किस्सा सिर्फ स्टीफन हॉकिंग की सहिष्णुता को दर्शाता है. बाकी सायकोलोजिकली ध्यान से समझा जाए तो प्रमुख सवाल यह कि स्टीफन हॉकिंग को यह बात फिर उठाने की आवश्यकता ही क्यों पड़ी? सिर्फ इसलिए कि इस वैज्ञानिक युग में भी आपकी धरती पर ऐसे धार्मिक कट्टर लोगों की कोई कमी नहीं है जो आज भी गैलिलियो से नाराज हैं. सो, कुल-मिलाकर स्टीफन हॉकिंग का आज की तारीख में गैलिलियो की बात छेड़ना सिवाय वहां की 'असहिष्णु-मानसिकता' के और कुछ नहीं दर्शाता है. वरना एक ऐसा "महान वैज्ञानिक सत्य" जो सिद्ध भी हो चुका हो, क्या उसके साथ ही गैलिलियो की महानता तथा बाइबल की आधारहीनता सिद्ध नहीं हो जाती है? लेकिन ऐसा नहीं हुआ तभी तो स्टीफन हॉकिंग को गैलिलियो का मुद्दा उठाना पड़ा. और असहिष्णुता की हद तो यह कि पोप जॉन पॉल द्वितीय ने पादरियों द्वारा गैलिलियो के साथ किए गए गलत व्यवहार की तो माफी मांगी, परंतु बाइबल की त्रुटि नहीं स्वीकारी तो नहीं ही स्वीकारी. यह भी तो असहिष्णुता हुई.... मिस्टर ओबामा, मुझे लगता

है कि अब आप समझ गए होंगे कि सहिष्णु कौन है तथा किन्हें धार्मिक सहिष्णुता के उपदेश की जरूरत ज्यादा है.

हां, एक बात और! तुम्हें या तुम्हारे देशवासियों या अन्य पश्चिमी देशों की संतानों को मेरी बात का बुरा मानने की आवश्यकता नहीं है. मेरी किसी भी बात को व्यक्तिगत तौर पर लेना, एक महान अवसर गंवाना होगा. क्योंकि देश चाहे कोई भी क्यों न हो, आखिर में तो मेरे समेत सारे देश महान पृथ्वी की ही संतानें हैं. और फिर संतानें चाहे जिस धरती की हो, सब खुशी से जीए व प्रगति करे...यही हर धरती की चाह होती है. सो मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ; वह करुणावश सबकी खुशी तथा प्रगति के लिए ही कह रहा हूँ. और फिर अभी तो मैंने अपनी बात शुरू करी है, कोई खत्म थोड़े ही करी है. अत: मुझे यकीन है कि मेरी करुणा से भरी सारी समझाइशें पूरे विश्व के काम आएंगी, और पूरा विश्व तहेदिल से मेरे हर शब्द का सम्मान करेगा.

मिस्टर ओबामा, अब तक मैंने अपनी धरती की धार्मिक सहिष्णुता की चर्चा की. निश्चित ही इससे आपको काफी कुछ अंदाजा आ ही गया होगा कि आपके द्वारा भारत के वासियों को धार्मिक सहिष्णुता की शिक्षा देना, कोई बहुत शोभनीय बात नहीं थी. और शायद यह चूक इसलिए हो गई क्योंकि आपको भारतीयों की धार्मिक सहिष्णुता के बारे में ठीक से जानकारी नहीं थी. खैर, वह बात छोड़ो. लेकिन चूंकि बात निकली ही है, तो मैं

अपनी धरती तथा उसकी सहिष्णुता का लंबा इतिहास अवश्य बताना चाहूंगा. क्योंकि मेरी यानी भारत की यह धरती सिर्फ धार्मिक सहिष्णुता में ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक सहिष्णुता में भी विश्व में सबसे अव्वल है. और यह निश्चित ही मेरे लिए गर्व की बात है. सच कहूं तो मेरी धरती की 'सांस्कृतिक सहिष्णुता' तो सलामी के योग्य है. ...मैं तो कहता हूँ कि यदि आज का विश्व भारत की सांस्कृतिक सहिष्णुता को समझ ले और उसको अपना ले तो शायद विश्व पर छाए नफरत के बादल पूरी तरह छंट जाएं. क्योंकि आज के विश्व की सबसे बड़ी समस्या ही मनुष्यों की आपसी दूरियां तथा उनके बीच बढ़ रहा आपसी अविश्वास है. और जबतक मनुष्यों में आपसी भाईचारा तथा विश्वास नहीं, वह चैन से जी ही कैसे सकता है? आठ-दस व्यक्तियों के एक छोटे-से परिवार में यदि आपसी विश्वास तथा भाईचारा न हो तो उस परिवार के सुख-चैन नहीं उड़ जाते हैं? क्या ऐसे वातावरण में जीना बोझ नहीं हो जाता है? ...बिल्कुल हो जाता है. तो फिर यह विश्व भी तो एक परिवार ही है. और अब तो पुरानी बात भी नहीं कि जहां मनुष्य अपने ही विस्तार में सिमट कर रहता था. अब तो विज्ञान की मेहरबानी तथा कम्युनिकेशन और ट्रान्सपोर्टेशन के विस्तार के बाद पूरा विश्व यूं ही एक शहर-सा हो गया है. किसी एक देश में पत्ता हिले तो क्षणभर में विश्व के सभी देशों तक वह खबर पहुंच जाती है. वहीं एक देश से दूसरे देश जाना भी अब एक दिन से ज्यादा की बात नहीं रह गई है. ऐसे में पूरे विश्व का आपसी भाईचारा और विश्वास और भी जरूरी हो जाता है. और यह आपसी भाईचारा भारत की "सांस्कृतिक सहिष्णुता" से बेहतर और कोई नहीं सिखा सकता है.

सो मैं अब सीधे मेरी धरती की सांस्कृतिक सहिष्णुता पर आता हूँ. शायद आपको मालूम न हो तो मैं बता दूं कि भारत में कुल 29 राज्य और 7 केन्द्र शासित प्रदेश हैं. और सबसे बड़ी बात यह कि यहां हर राज्य की अपनी एक सांस्कृतिक विरासत है जो अन्य राज्यों से काफी भिन्न है. कहने को तो हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है, परंतु यह भी भारत के सभी प्रांतों की मुख्य भाषा नहीं है. यही नहीं, कई राज्य...वे भी बड़े-बड़े राज्य ऐसे हैं जहां हिंदी न के बराबर बोली जाती है. खासकर दक्षिण के किसी भी प्रदेश में एक कर्नाटक को छोड़कर हिंदी कहीं नहीं बोली जाती है. वहां के अधिकांश लोग हिंदी समझते भी नहीं हैं. भारत में चन्द राज्य ही ऐसे हैं, जहां हिंदी प्रमुखता से बोली और समझी जाती है. और इसमें भी सबसे बड़ा आश्चर्य यह है कि इन सभी हिन्दी-भाषी प्रांतों की भी अपनी ही एक निराली हिंदी है. अर्थात उन राज्यों में बोली जानेवाली हिंदी भी आपस में मेल नहीं खाती है. अलग-अलग प्रांतों में बोली जानेवाली हिंदी के ना तो उच्चारण मिलते हैं और ना उनके बोलने के लहजे ही आपस में मिलते हैं.

निश्चित ही आप कहेंगे कि यह सब बातें आप मुझे क्यों बता रहे हैं? ...तो मैं कोई बात ऐसे थोड़े ही कहूंगा. सहिष्णुता समझने तथा उसे अपनाने के लिए मेरी धरती की हर बात समझना जरूरी है. यह अपने तरीके की एक ही धरती है जो अपने में अनेक

विविधताएं समाए हुए है. खैर यह तो ठीक, परंतु प्रमुख बात यह कि बावजूद इसके, यहां आपसी भाईचारे तथा विश्वास की कहीं कोई कमी नहीं है. और ये सारी बातें मैं जैसे-जैसे विस्तार से समझाता चला जाऊंगा, तुम्हारी समझ में आता चला जाएगा कि ये सारी बातें मैं तुमसे क्यों कह रहा हूँ. ...और मैं फिर कहता हूँ कि तुम तो एक बहाना हो, दरअसल तो तुम्हारे जरिए मैं पूरे विश्व को सहिष्णुता क्या होती है...यह समझाना चाहता हूँ. क्योंकि मेरी चिंता "विश्व" को लेकर है. ...यदि विश्व ने बढ़ती असहिष्णुता को नियंत्रित नहीं किया तो पृथ्वी को नरक होते देर नहीं लगेगी.

सो, मैं एकबार फिर अपनी धरती तथा उसके निवासियों की सांस्कृतिक सहिष्णुता पर लौट आता हूँ. जैसा मैंने बताया कि कुल 36 भागों में विभाजित मेरी धरती है, तथा इन सभी भागों की अपनी एक अलग सांस्कृतिक धरोहर है. और इनकी इस संयुक्तता से मैं यानी "भारत देश" बना है. ...तथा यही इस धरती की विशेषता है. ना सिर्फ इन राज्यों की भाषाएं, बल्कि यहां के रहन-सहन भी सर्वथा भिन्न हैं. यही क्यों? पहनावे से लेकर भोजन तक भी सबके अपने हैं. और-तो-और, उत्सव तथा उत्सव मनाने की रीत भी सबकी अपनी है. यही नहीं, सबकी अपनी नृत्य शैलियां हैं. और आप आश्चर्य करेंगे कि संगीत की भी सबकी अपनी एक अलग ही ऐतिहासिक विरासत है.

यदि मैं इन विभिन्नताओं को थोड़ा विस्तार से कहूं तो शायद जो मैं समझाना चाह रहा हूँ वह तुम्हारे लिए समझना आसान हो जाए. तो शुरुआत मैं भोजन से ही करता हूँ. मोटा-मोटी तौरपर यदि मैं कहूं तो भारत में 50 से ज्यादा तरीके के भिन्न-भिन्न भोजन पकाए व खाए जाते हैं. और यह सब एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं. इन पचासों तरीके के व्यंजनों को खाकर आप यह सोच ही नहीं सकते कि यह एक ही देश के भिन्न-भिन्न भोजन हैं. जबकि सामने विश्व के अधिकांश देशों में एक ही तरीके का भोजन खाया जाता है. यही नहीं, अक्सर तो उसके आस-पास के अन्य देशों में भी उससे मिलता-जुलता भोजन ही खाया जाता है. और यह बात मैं इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि विभिन्नताओं का सीधा ताल्लुक सहिष्णुता से है. यह सिद्धांत है कि जहां ...जितनी ज्यादा असहिष्णुता, वहां उतनी कम विविधता. और भारत की विविधता ही भारतीय सहिष्णुता की सबसे बड़ी गवाह है. यहां यह और बता दूं कि भारत के हर छोटे-मोटे शहर में भी आपको देश के तमाम प्रकार के व्यंजनों के एक नहीं अनेक रेस्टोरेन्ट मिल जाएंगे. यहां यह भी स्पष्ट कर दूं कि किसी भी राज्य के ऐसे कोई व्यंजन नहीं जो पूरे देश में चाव से नहीं खाए जाते हों. भारत में कितने तरीके की दाल, कितने तरीकों के अचार व चटनियां खाई जाती हैं और कितने प्रकार की रोटियां खाई जाती हैं, इसका तो हिसाब लगाना ही असंभव है. कुल-मिलाकर कहूं तो जितने प्रकार के व्यंजन भारत में पकाए और खाए जाते हैं उनकी संख्या पूरे विश्व में उपलब्ध तमाम प्रकार के व्यंजनों से कई गुना ज्यादा है. सो मुझे उम्मीद है कि पूरे विश्व को भारतीय संस्कृति की विविधता तथा उसकी गहराई समझ में आ गई होगी. निश्चित ही इससे

सबकी समझ में आ गया होगा कि भारत की “सांस्कृतिक सहिष्णुता” की विरासत कितनी महान है.

वैसे तो यही क्यों, सबसे दिलचस्प बात तो यह है कि इतने प्रकार के भारतीय व्यंजन उपलब्ध होने के बावजूद विश्व के सभी प्रमुख भोजन भी भारत के हर छोटे-बड़े शहरों में उतने ही मशहूर हैं, जितने कि यहां के स्थानीय व्यंजन. कहने का तात्पर्य यह कि वे सब भी यहां उतने ही चाव से खाए जाते हैं, जितने चाव से यहां पर स्थानीय व्यंजन खाए जाते हैं. खासकर चाइनिज, मेक्सिकन, इटालियन, थाई, लेबनीस तथा कॉन्टिनेन्टल व्यंजन तो यहां हरकोई खाता है. और ये तमाम अंतर्राष्ट्रीय व्यंजन भारत में कहीं से भी भारतीय व्यंजनों से कम लोकप्रिय नहीं है. इन सभी अंतर्राष्ट्रीय व्यंजनों के भारत में हजारों बड़े व शानदार रेस्टोरेन्ट मिल जाएंगे. अत: दुनियावालों, मैं पूछना इतना ही चाहता हूँ कि मेरे अलावा दूसरी ऐसी कोई एक धरती बताओ जहां ना सिर्फ हजारों तरीके के व्यंजन बनाए जाते हों, बल्कि तमाम मशहूर अंतर्राष्ट्रीय व्यंजन भी वहां के आम लोगों द्वारा उतने ही चाव से खाए भी जाते हों? इसे कहते हैं सहिष्णुता. समझे...? तभी तो मैं कह रहा हूँ कि कोई मेरी धरती पर आकर मेरे निवासियों को सहिष्णुता का बोध दे जाए तो बात पूरी तरह से बेतुकी ही नहीं, हास्यास्पद भी हो जाती है.

खैर, यहां यह भी बता दूं कि भारत की यह सांस्कृतिक विविधता तथा सहिष्णुता ‘भोजन’ तक ही सीमित नहीं है. भारतीय सांस्कृतिक धरोहर भी हर क्षेत्र में विविधताओं से भरी है, तथा हर क्षेत्र में उतनी ही सहिष्णु है. संक्षेप में समझाने का प्रयास करूं तो यहां के हर प्रांत का अपना ना सिर्फ एक अलग संगीत है, बल्कि यहां के हर प्रांत के अपने भिन्न-भिन्न नृत्य भी हैं. लेकिन बावजूद इसके, तमाम अंतर्राष्ट्रीय मशहूर संगीत व नृत्य भी भारत में लोकप्रिय हैं. यही क्यों, यहां के हर प्रांत की अपनी एक वेश-भूषा है. आप मानेंगे नहीं कि यहां के हर प्रांत के पहनावों में इतनी विविधता है कि कौन किस प्रांत का है, यह पहनावे-मात्र से ही पता लगाया जा सकता है. मैं दावे से कहता हूँ कि जितने तरीके के पहनावे भारत में पहने जाते हैं, पूरे विश्व में मिलाकर उतने तरीके के पहनावे नहीं पहने जाते हैं. ...इसे कहते हैं सांस्कृतिक धरोहर. और सहिष्णुता की ऊंचाई तो यह कि पोशाकों की इतनी विविधता उपलब्ध होने के बावजूद भी आज की तारीख में भारत की सबसे लोकप्रिय पोशाकें पश्चिमी ही हैं. अर्थात कोट, पैन्ट, शर्ट, गाऊन, नाइट सूट, शॉर्ट, स्कर्ट वगैरह.

और फिर भारतीय सहिष्णुता की बात ही क्या करना? इसकी तो जितनी चर्चा करी जाए कम है. सभी जानते हैं कि भारत का प्रमुख धर्म...हिंदू है. 2011 की जनगणना को आधार माना जाए तो कुल जनसंख्या के करीब अस्सी प्रतिशत लोग यहां हिंदू धर्म का पालन करते हैं. भारत का सबसे बड़ा संवैधानिक पद राष्ट्रपति है. और पूरे विश्व को आश्चर्य होगा कि देश को आजाद हुए अभी सत्तर वर्ष ही हुए हैं, और उसमें तीन बार इस सर्वोच्च पद को मुसलमान सुशोभित कर चुके हैं. उनके नाम कहूं तो...

1) डॉ. जाकिर हुसैन
2) फखरुद्दीन अली अहमद
3) डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम

इसके अलावा श्री. मुहम्मद हिदायतुल्लाह जो कि एक मुसलमान हैं, वे भी दो मर्तबा कार्यवाहक-राष्ट्रपति का पद सम्भाल चुके हैं. यही क्यों, ज्ञानी जैल सिंह जो कि एक सिख थे, वे भी एक बार राष्ट्रपति के पद को सुशोभित कर चुके हैं. ...इतना ही नहीं "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस" जो कि भारत की सबसे बड़ी तथा पुरानी राजनैतिक पार्टी है, जिसने आजादी से आजतक के सत्तर वर्षों में करीब पचास वर्षों से ज्यादा चुनाव जीतकर देश पर शासन किया है; उस पार्टी की प्रेसिडेन्ट सन 1998 से यानी कि पिछले अठारह वर्षों से इटली में पैदा हुई सोनिया गांधी हैं. और उनके अध्यक्ष बनने के बाद कांग्रेस दो बार चुनाव जीतकर दस वर्षों तक राज भी कर चुकी है. और इन पूरे दस वर्षों तक भारत के जो प्रधानमंत्री थे; यानी कि डॉ. मनमोहन सिंह, वे भी एक सिख थे. सोचो, सैकड़ों वर्षों की गुलामी के बाद भी इस धरती ने सहिष्णुता नहीं खोई है. बताइए मुझे मिस्टर ओबामा कि विश्व के कौन-से देश में सहिष्णुता की ऐसी मिसाल आपको मिल सकती है? और फिर दूर क्यों जाना, आपके अमेरिका के इतने विशाल इतिहास में कितने गैर-क्रिश्चियन राष्ट्रपति बने? ...शायद एक भी नहीं. और फिर आप यह क्यों भूलते हैं कि अमेरिका के इतने लंबे इतिहास के बावजूद आप वहां के पहले ब्लैक राष्ट्रपति हैं. यानी इतनी बड़ी जनसंख्या होने के बावजूद उसके किसी प्रतिनिधि को प्रमुख पद तक पहुंचने में इतने वर्ष लग गए. ...और यहां भारत में सिख समुदाय, जिनकी जनसंख्या भारत की कुल जनसंख्या के करीब दो प्रतिशत है, उनके प्रतिनिधियों को यहां के राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री, दोनों पदों की शोभा बढ़ाने का अवसर प्राप्त हो चुका है. इतना ही नहीं, खुले विचारों का दावा करने तथा सबको एक निगाह से देखने जैसी बातें करने के बावजूद अमेरिका के इतने लम्बे इतिहास में एक भी महिला आजतक राष्ट्रपति के पद तक नहीं पहुंच पाई है. यह तो ठीक, अमेरिकी असहिष्णुता की हद तो यह कि प्रजातंत्र की स्थापना के 132 वर्ष तक तो आपके यहां महिला को वोट देने का अधिकार तक नहीं था. ...जबकि भारत में प्रजातंत्र की स्थापना के साथ ही महिलाओं को वोटिंग का अधिकार उपलब्ध था. और-तो-और, भारतीय प्रजातंत्र के मात्र सत्तर वर्ष के इतिहास में स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी दो बार प्रधानमंत्री के पद को सुशोभित कर चुकी हैं. यही क्यों, श्रीमती प्रतिभा पाटिल तो पांच वर्ष के लिए राष्ट्रपति का पद भी संभाल चुकी हैं. अत: निवेदन सिर्फ इतना ही करना चाहता हूँ कि विश्व के किसी भी व्यक्ति को भारत को सहिष्णुता सिखाने की आवश्यकता नहीं है. सच तो यह है कि पूरे विश्व को भारत से सहिष्णुता सीखने की आवश्यकता है. और यह बात मैं मारे घमंड के नहीं, करुणा से भरकर कह रहा हूँ. मेरा मकसद कतई स्वयं को या मेरे निवासियों को ऊंचा

दिखाने का नहीं है. मेरा मकसद तो इस बहाने विश्वसमुदाय में आपसी सहिष्णुता बढ़ाने का है. सबको सहिष्णुता का सबक सिखाने का है. अत: मेहरबानीकर सब करना, परंतु मेरी भावना पर शक मत करना.

चलो अब मैं आपको मेरे इतिहास के बारे में बताता हूँ. क्योंकि सहिष्णुता की कोई भी गहराई समझने हेतु मेरा यह इतिहास जानना बहुत जरूरी है. और जब मैं इतिहास की बात कर रहा हूँ तो यह समझ ही लेना कि मेरा अपना अलग अस्तित्व जिसे आप "भारत" के रूप में जानते हैं, यह तो आप मनुष्यों का बनाया हुआ है. वास्तव में तो मैं महान पृथ्वी का एक अटूट हिस्सा ही हूँ. सो, पहले मैं पृथ्वी का इतिहास ही बताता हूँ. और जहां तक पृथ्वी के इतिहास का सवाल है तो वहां भी यह ध्यान रख ही लेना कि पृथ्वी का अलग अस्तित्व भी आप मनुष्यों ने ही जाना है. अंत में तो पृथ्वी भी महान ब्रह्मांड का ही एक अटूट हिस्सा है. अत: भारत का इतिहास जानने हेतु पृथ्वी का, और पृथ्वी का इतिहास जानने हेतु ब्रह्मांड का इतिहास जानना बहुत जरूरी है; क्योंकि वास्तव में तो इन तीनों के इतिहास को अलग करके देखा ही नहीं जा सकता है.

सो, मैं प्रारंभ "ब्रह्मांड" से करता हूँ. यह ब्रह्मांड करीब पन्द्रह अरब वर्ष पूर्व शून्य से हुए महा-विस्फोट के कारण अस्तित्व में आया है. और यह "शून्य" क्या है, यह समझना न आपके और ना विज्ञान के बूते की ही बात है. क्योंकि विज्ञान जब भी सोचेगा और जितना भी सोचेगा, वह "टाइम ऍण्ड स्पेस" अर्थात "समय और स्थान" के भीतर ही सोचेगा. वहीं आम मनुष्यों में भी इतनी प्रज्ञा कहां कि वह समय और स्थान के पार भी कुछ है, उसकी कल्पना तक कर सके. हालांकि यह कह दूं कि जो कुछ भी समय और स्थान के पार है, वही महत्वपूर्ण है. ब्रह्मांड हो या मनुष्य का जीवन, सबकी अंतिम बागडोर तो उन्हीं तत्वों के पास है जो समय और स्थान के पार है. तथा यह कौन से तत्व हैं जो समय और स्थान के पार हैं, यह तो 'टाइम और स्पेस" पर आधारित अच्छी सायकोलोजी समझकर ही समझा जा सकता है. सो, अभी तो मैं वापस ब्रह्मांड के अस्तित्व पर ही आ जाता हूँ. और इस बाबत मैं आधुनिक विज्ञान को वाकई सलाम करना चाहता हूँ. क्योंकि वह अपनी बुद्धिमत्ता तथा लगन के सहारे ब्रह्मांड के अनेक रहस्यों पर से परदा उठाने में कामयाब रहा है. हाल ही में प्रचलित "बिग बैंग थिअरी" के तारण को ही आधार बनाकर समझाऊं तो ब्रह्मांड आज से करीब 13.7 अरब वर्ष पूर्व एक अति सूक्ष्म इलेक्ट्रॉन के कारण अस्तित्व में आया है. इस थिअरी के अनुसार अचानक उस शून्य के समान इलेक्ट्रॉन में एक धमाका हुआ तथा वह एक सेकन्ड से भी कम के समय में ब्रह्मांड में परिवर्तित हो गया. बिग बैंग थिअरी आगे कहती है कि इस धमाके से जो ऊर्जा पैदा हुई, उस ऊर्जा ने कण और अणु का स्वरूप

धारण कर लिया. और आगे चलकर इन्हीं अणुओं के जुड़ने से आकाशगंगाएं अस्तित्व में आयी.

यहां दिक्कत एक ही है. विज्ञान की पहुंच उस तत्व तक नहीं है जो कि टाइम और स्पेस के पार है. अत: मैं यह स्पष्ट कर दूं कि विज्ञान जिसे सूक्ष्म इलेक्ट्रॉन कह रहा है, वह सूक्ष्म वस्तु इलेक्ट्रॉन न होकर एक शून्य है. शून्य यानी बिना स्पेस का. और जब स्पेस ही नहीं तो सूक्ष्म होने का भी सवाल ही नहीं. वैसे ही जब विज्ञान कहता है कि यह विस्फोट एक सेकन्ड से भी कम के समय में ब्रह्मांड में परिवर्तित हो गया, तो यह भी गलत है. विस्फोट चूंकि शून्य से हुआ है, अत: समय का भी सवाल ही नहीं उठता. और जब समय ही नहीं तो एक सेकन्ड या उसके लाखवें हिस्से का भी सवाल ही कहां उठता है? समय व स्थान तो अस्तित्व में ही उस विस्फोट के बाद आए हैं. अब जब यह बात विज्ञान की समझ के बाहर की है तो आम मनुष्यों के तो टाइम और स्पेस के पार की दुनिया को समझने का सवाल ही नहीं है. हां, कृष्ण द्वारा कही भगवद्गीता तथा लाओत्से के सूत्रों ‘‘ताओ-ते-चिंग’’ में ब्रह्मांड के अस्तित्व में आने के वास्तविक सिद्धांत उल्लेखित हैं. परंतु यहां भी सवाल यह कि उसे ठीक से समझे कौन? होगा, मैं स्वयं जल्द ही अपनी अगली किताब में ‘समय’ पर कुछ कहूंगा. उम्मीद है कि उसके बाद ना तो विज्ञान को और ना ही आम मनुष्यों को ‘समय’ के बाबत कोई अज्ञान बचा रह जाएगा. यूं तो महान आइन्स्टाइन ने समय के खेल को काफी कुछ समझा भी था और समझाया भी था. और सही मायने में देखा जाए तो विज्ञान के ब्रह्मांड तक की छलांग लगाने में आइन्स्टाइन द्वारा प्रतिपादित समय के सिद्धांतों ने ही प्रमुख भूमिका निभाई है. परंतु मैं जो समय कहूंगा उसमें समय के अस्तित्व में आने से लेकर उसके तमाम स्वरूपों का विस्तार से वर्णन करूंगा. उसके बाद निश्चित ही ‘‘विज्ञान की सहायता तथा मनुष्यों की प्रज्ञा के सहारे’’ मनुष्य के लिए कुछ भी असंभव नहीं रह जाएगा.

चलो, यह सब भविष्य की बात है और उसे भविष्य पर ही छोड़ देते हैं. हम तो सीधे-सीधे वापस वर्तमान विषय पर ही आ जाते हैं. हमने ब्रह्मांड के अस्तित्व में आने की बात तो समझ ली. अब सवाल यह कि क्या पृथ्वी भी ब्रह्मांड के साथ ही अस्तित्व में आ गई थी? मैं पहले इस बाबत विज्ञान क्या कहता है, वह बताता हूँ. विज्ञान के अनुसार आज से करीब पांच अरब वर्ष पहले तक आज का जो सौर मंडल है, वह सौर मंडल न होकर मेघ और राख का एक गुबार-मात्र था. और इस गुबार के बाहर एक अत्यंत ही विशाल सूर्य था, जिसका प्रकाश आज के सूर्य के प्रकाश से दस अरब गुना ज्यादा था. बस एक दिन अचानक यह गुबार फटा तथा उसके फटने से उसमें एक हलचल पैदा हुई. और उस हलचल के कारण राख का वह गुबार एक चक्र में परिवर्तित हो गया. तत्पश्चात उन चक्रों के केन्द्र में कई सूर्यों की उत्पत्ति हुई. इन सूर्यों की उत्पति के साथ ही उनके आसपास जो राख का ढेर मौजूद था, उसमें भी हलचल पैदा हो गई. परंतु उन सूर्यों के गुरुत्वाकर्षण के कारण

राख का वह ढेर ज्यादा दूर तक बिखर न सका और धीरे-धीरेकर उन सूर्यों में से एक सूर्य के राख के इस ढेर ने ‘‘गरम-लावा’’ का स्वरूप धारण कर लिया. हालांकि जल्द ही यह लावा ठंडा होने लगा, और ठंडा होते ही इसने ग्रहों का स्वरूप धारण कर लिया. बस आज की यह पृथ्वी भी उन्हीं ग्रहों में से एक है. विज्ञान के अनुसार यह घटना करीब साढ़े-चार अरब वर्ष पूर्व घटी थी. यानी पृथ्वी अस्तित्व में करीब साढे-चार अरब वर्ष पूर्व आई है.

अब निश्चित ही, विज्ञान का यह तारण सत्य के निकट है. और उस हेतु एकबार फिर मैं वैज्ञानिक चेतना को सलाम करता हूँ. निश्चित ही जो विज्ञान ने कर दिखाया है वह पिछले लाखों वर्षों में किसी ने नहीं किया. मनुष्य-चेतना की जो ऊंचाइयां विज्ञान ने छुई है, वह लाखों वर्षों में किसी ने नहीं छुई है. परंतु हां, यहां भी विज्ञान को एक बात समझने की है कि पृथ्वी भी अस्तित्व में उसी दिन आ गई थी जिस दिन यह ब्रह्मांड अस्तित्व में आया था. दरअसल यह एक सनातन सिद्धांत है कि जो भी ‘टाइम और स्पेस’ की सीमा में कैद है ‘‘उसे ना तो कभी उत्पन्न ही किया जा सकता है; और ना ही उसे कभी मिटाया ही जा सकता है.’’ अत: जो कुछ भी यहां दृश्यमान है वह सबकुछ ब्रह्मांड के अस्तित्व में आने के साथ ही अस्तित्व में आया हुआ है. फिर वह पृथ्वी हो या मनुष्य. उसके पश्चात तो सबका सिर्फ रूपांतरण हो रहा है. अत: पृथ्वी भी अस्तित्व में तो तभी आ गई थी जिस दिन यह ब्रह्मांड अस्तित्व में आया था. बस उसने अपना स्वरूप बदलते-बदलते वर्तमान पृथ्वी का स्वरूप धारण करने में दस अरब वर्ष लगाए. उम्मीद है कि यह सीधी बात विज्ञान के तथा आपके, दोनों की समझ में आ गई होगी. अत: यह सिद्धांत हमेशा के लिए ध्यान में रख लेना कि यहां ब्रह्मांड के अस्तित्व में आने के बाद न तो कोई कण कभी पैदा हुआ है और ना ही कोई कण कभी मिटा है- सबका सिर्फ एक से दूसरे में रूपांतरण हुआ है. और ऐसे एक नहीं हजारों सनातन सत्य हैं जिनकी चर्चा भगवद्गीता तथा लाओत्से के सिद्धांतों में मिलती है. खैर, अभी तो उम्मीद यह कर रहा हूँ कि पृथ्वी के अस्तित्व में आने की दास्तान आपकी समझ में आ गई होगी. साथ ही विज्ञान का काबिले-तारीफ कार्य भी आपकी समझ में आ ही गया होगा.

चलो पृथ्वी ने अपना वर्तमान स्वरूप करीब साढ़े-चार अरब वर्ष पूर्व धारण कर लिया था, यह बात तो समझे; परंतु अब प्रश्न यह उठता है कि पृथ्वी पर जीवन कब और कैसे आया? तो इस हेतु पहले यह बताएं कि जीवन का आधार क्या है? बिल्कुल ठीक सोचा आपने...‘पानी’. अब चूंकि पृथ्वी आग का लावा थी तो शुरुआती दौर में तो इसमें पानी होने का सवाल ही नहीं उठता है. यानी पानी पृथ्वी पर था नहीं, कहीं बाहर से आया है. और पृथ्वी के बाहर तो अंतरिक्ष ही है. अत: सीधी बात है कि पानी पृथ्वी पर अंतरिक्ष से ही आया है. ...और कैसे? सो हुआ यह कि धमाकों के बाद बड़ी मात्रा में कई प्रकार के ज्वलनशील पदार्थों की उत्पत्ति हुई, जिसमें एक पदार्थ हाइड्रोजन भी था. अपनी उत्पत्ति के साथ यह हाइड्रोजन के कण करोड़ों वर्षों तक आपस में टकराते रहे. इस आपसी टकराहट

के कारण हाइड्रोजन के कण धीरे-धीरेकर हीलियम में रूपांतरित होते गए. तथा इसी हीलियम और हाइड्रोजन के गठजोड़ से तारे बने. फिर जब इन तारों में धमाका हुआ तो एकबार फिर राख का बड़ा गुबार बना. राख के इस गुबार में कार्बन, नियोन, सल्फर, सोडियम, क्लोरीन तथा सिलिकॉन के साथ-साथ ऑक्सीजन जैसे पदार्थ भी शामिल थे. आगे यह हुआ कि पहले से घूम रहे हाइड्रोजन के तथा नए पैदा हुए ऑक्सीजन के कण सिलिकॉन तथा कार्बन के कणों पर बैठने लगे. वहीं यह भी संयोग ही है कि इन्हीं सिलिकॉन और कार्बन के ईर्द-गिर्द हाइड्रोजन के दो कण तथा ऑक्सीजन के एक कण का मिलन होना प्रारंभ हो गया. और उसी रिएक्शन से अचानक पानी की उत्पत्ति हुई. फिर इस बढ़ते पानी ने अंतरिक्ष में बर्फ का स्वरूप धारण कर लिया. तत्पश्चात आज से करीब चार अरब वर्ष पूर्व अंतरिक्ष से बर्फ के कई गोले, जिसे वैज्ञानिक भाषा में एस्टेरोइड्स तथा कॉमेट्स कहा जाता है, पृथ्वी पर गिरे. और चूंकि पृथ्वी अब भी आग का गोला थी, सो बर्फ के ये गोले पृथ्वी पर आते ही एकबार फिर पानी में रूपांतरित हो गए. तथा जहां-जहां गड्ढ़े थे वहां पानी जमा होने लगा. इसी से नदियां, समुद्र व तालाब बने.

फिर क्या था? एकबार जब पानी पृथ्वी पर आ गया तो जल्द ही अमीबा व बैक्टीरिया के रूप में जीवन भी आ गया. और फिर तो पेड़-पौधे भी निकल आए. यह सब भी करीब 3 अरब वर्ष पुरानी कहानी है. और उसके बाद तो यह एक प्रोसेस में आ गया. जीवन और चेतना का विकास होता चला गया. छोटे-मोटे बैक्टीरिया ‘‘मछली, जानवर तथा पक्षियों’’ का स्वरूप धारण करते चले गए. महत्वपूर्ण बात यह कि इस बढ़ते जीवन तथा इस बढ़ती चेतना को मनुष्य का स्वरूप धारण करने में पूरे तीन अरब वर्ष लगे. अर्थात समझें तो ब्रह्मांड के अस्तित्व में आने के करीब नौ अरब वर्ष बाद पृथ्वी अस्तित्व में आई, तथा पृथ्वी के अस्तित्व में आने के बाद के भी करीब चार अरब से ज्यादा वर्षों बाद ‘मनुष्य’ अस्तित्व में आया. बस यह समझाने हेतु ही मैंने आप लोगों को ब्रह्मांड तथा पृथ्वी के अस्तित्व में आने का इतिहास बताया. उपरोक्त इतिहास से समझना सिर्फ इतना है कि मनुष्य जीवन कितना कीमती है. क्योंकि चेतना अपने अस्तित्व में आने के बाद भी करीब चार अरब वर्ष की मेहनत के बाद ही मनुष्य का स्वरूप धारण कर पाई है. और कहने की जरूरत नहीं कि यह मनुष्य स्वरूप चेतना की अंतिम ऊंचाई है. तथा इस कारण ‘‘यह मनुष्य जीवन’’ और भी महत्वपूर्ण हो जाता है. सो, सौ बातों की एक बात यह कि ऐसे में इतने बेशकीमती मनुष्यजीवन को आपसी असहिष्णुता के कारण बर्बाद कतई नहीं किया जा सकता है. और यही कारण है कि मैं आज सभी मनुष्यों को सहिष्णुता का पाठ पढ़ाने उपस्थित हुआ हूँ.

खैर, ब्रह्मांड तथा पृथ्वी के अस्तित्व में आने का इतिहास आपने जान लिया. साथ ही जीवन के अस्तित्व में आने का इतिहास भी आपने समझ ही लिया. अब उम्मीद करता हूँ कि मनुष्य-जीवन के महत्व को भी आपने समझ ही लिया होगा. सो अब मैं सीधे अपने

इतिहास पर आता हूँ. और मेरा इतिहास अलग से इसलिए आवश्यक है...क्योंकि यह इतिहास अन्य सभी भू-भागों के इतिहास से सर्वथा भिन्न है. हालांकि मैं अपना इतिहास दो लाख वर्ष पूर्व से प्रारंभ न करके पांच-दस हजार वर्ष पूर्व से ही प्रारंभ करता हूँ. क्योंकि जो मैं समझाना चाह रहा हूँ...उस हेतु इतना इतिहास समझना ही काफी है. निश्चित ही आज से पांच हजार वर्ष पूर्व मैं ऐसा नहीं था, जैसा आज हूँ. उस समय मोटामोटी तौरपर मुझे "आर्यावर्त" के नाम से जाना जाता था. यह आर्यावर्त कोई देश नहीं था, बल्कि अंदाजे से माना और समझा जानेवाला एक क्षेत्र था. अब उस समय वैज्ञानिक प्रगति तो हुई नहीं थी कि उसका कोई नक्शा बनाया गया हो. वहीं उस समय तक गाड़ियों या हवाईजहाज का भी निर्माण नहीं हुआ था. सो स्वाभाविकरूप से मनुष्य सफर घोड़ागाड़ी तथा बैलगाड़ियों में ही करता था. और आप समझ ही सकते हैं कि अब घोड़ागाड़ी तथा बैलगाड़ियों से वह कितनी दूर जा सकता था! सो हरकोई अपने-अपने क्षेत्रों में ही सिमटकर रहता था. उस समय के आर्यावर्त की संस्कृति में राजपाट तथा राजाओं का युग आ गया था. उस समय के आर्यावर्त में हजारों नगर थे. और जितने नगर थे उतने ही राज्य और राजा थे. मैं इस समय बात मेरे यानी "भारत के महाभारत के युग की" कर रहा हूँ. उस समय आर्यावर्त की कुल जनसंख्या करीब पचास लाख थी. और इन पचास लाख लोगों में ही करीब हजारों राज्य व राजे थे. खैर, प्रमुख बात यह कि इनमें आपसी झगड़े व युद्ध होते ही रहते थे.

अब आर्यावर्त का यह जो महाभारत का युग था, वह उस समय के इतिहास का सबसे प्रगतिशील युग था. उस युग में मनुष्यों ने एक-से-एक वस्त्रों व शानदार घरों व महलों का ही नहीं, बल्कि तेज गति से दौड़नेवाली घोड़ागाड़ियों का आविष्कार भी कर लिया था. साथ ही उसने पेट भरने हेतु तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजन भी ईजाद कर लिए थे. कहने का तात्पर्य यह कि इस युग का मनुष्य जीवन की तीनों जरूरियात यानी "रोटी, कपड़ा और मकान" के शिखरों को छू चुका था. लेकिन मेरा अनुभव है कि हर प्रगति के साथ मनुष्यों के अहंकार और असहिष्णुता भी बढ़ते ही चले जाते हैं. कायदे से होना इससे उल्टा चाहिए; बढ़ती प्रगति के साथ मनुष्यों को विनम्र तथा सहिष्णु होते चले जाना चाहिए, पर पता नहीं क्यों ऐसा होता नहीं है. सो महाभारत का प्रगतिशील युग भी इससे बाकात नहीं रहा. और बस इस बढ़ते अहंकार और बढ़ती असहिष्णुता के चलते उस युग के मनुष्यों ने एक-से-एक हथियार भी ईजाद करने शुरू कर दिए. तीर, भाले, तलवार, गदा तथा और भी ना जाने कितने हथियारों की धार उस युग में और भी तेज कर दी गई. दुर्भाग्य तो यह था कि हर तरह की शिक्षा में युद्ध-कला को ना सिर्फ शामिल किया जाने लगा, बल्कि उसे ही ज्यादा महत्व भी दिया जाने लगा.

अब एक तो वैसे ही धरती एक नहीं थी, जैसा कि आज का भारत एक है. धरती के इस छोटे-से टुकड़े का अनेक राज्यों में वैसे ही विभाजन था. और ऊपर से बढ़ती असहिष्णुता के कारण उनके आपसी टकराव बढ़ते जा रहे थे. ऐसा एक दिन नहीं जाता था,

जब कहीं-न-कहीं दो सेनाओं का युद्ध न हो रहा हो. अंत में आपस में बढ़ रही इस असहिष्णुता ने महाभारत के भयानक युद्ध का स्वरूप धारण कर लिया. उस समय के अधिकांश राजा अपनी सेना समेत इस महायुद्ध का हिस्सा बने. सभी एक या दूसरे खेमे में विभाजित हो गए. और आखिर इस ऐतिहासिक तथा महाविनाशक युद्ध ने उस समय के आर्यावर्त की पूरी प्रगति धूल में मिला दी. इस एक महायुद्ध के कारण सबकुछ खत्म हो गया. और जो धरती प्रगति के शिखर पर थी, वह अन्य धरतियों से बिछड़ गई. आपके इंटरनेट का इतिहास चाहे जो कह रहा हो, यह बात स्पष्टत: समझ लेना कि महाभारत का युग उस समय तक के मनुष्यजाति के इतिहास का सबसे प्रगतिशील युग था. प्रगति के ऐसे शिखर उस समय तक पृथ्वी की किसी धरती ने नहीं छुए थे. ...परंतु बढ़ रही आपसी असहिष्णुता ने सबकुछ खत्म कर दिया. बस इसी 'असहिष्णुता' के इन्हीं गंभीर परिणामों को समझाने हेतु मैं आज सबके सन्मुख प्रकट हुआ हूँ.

खैर, महाभारत के विनाशकारी युद्ध के बाद सब धीरे-धीरेकर सम्भलने अवश्य लगा; परंतु आप सभी जानते हैं कि बिगड़ा बनाना इतना आसान नहीं होता. और यही वो समय था, जब अन्य धरतियां प्रगति के मामले में आर्यावर्त से आगे निकल गई. बस मेरी धरती के पांच हजार वर्ष पूर्व की उन्नति से पतन तक के इसी इतिहास से सबको सबक लेना है. आज से पांच हजार वर्ष पूर्व जब यह धरती प्रगति के शिखर पर थी, यदि उस समय यहां के मनुष्यों में आपसी सहिष्णुता होती तो क्या आज का 'भारत' जो कि एक संघर्षरत मुल्क है; दुनिया के सबसे प्रगतिशील देशों में न होता? ...बिल्कुल होता. बस यह एक महत्वपूर्ण बात समझाने हेतु ही मैंने आपको मेरी धरती का इतिहास बताया. अत: समझदार वह जो इतिहास से सबक ले. जो एक असहिष्णुता के चलते कल आर्यावर्त का हुआ, वही... बढ़ती असहिष्णुता के कारण किसी अन्य देश या सम्पूर्ण मनुष्यजाति के साथ भी हो ही सकता है. और हो क्या सकता है, ऐसा होता ही रहता है. मनुष्यों ने प्रगति के शिखर पहली बार नहीं छूए हैं, कई बार छूए हैं. लेकिन हर बार आपस में बढ़ती असहिष्णुता ने प्रगति का भोग लिया है. और तत्पश्चात उसे भारत की ही तरह फिर अ-ब-स से शुरू करना पड़ा है. परंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि बिगड़ा आसानी से फिर बनता नहीं. और इस बाबत भारत का उदाहरण आपकी आखों के सामने है.

अब चूंकि भारतीय प्रगति की बातें विश्व में ना तो ज्यादा फैली है और न फैलाई ही गई है. इसलिए महाभारत के प्रगतिशील युग का आज के विश्व को कोई अंदाजा नहीं है. अत: कम-से-कम मैं यह दावे से कह सकता हूँ कि मनुष्य की प्रगति के बाबत जो भी इतिहास आप आज पढ़ते हैं, वह तथ्यों पर आधारित कतई नहीं है. और फिर अब तो इंटरनेट का जमाना है, जिसका सत्य से वैसे ही कुछ लेना-देना नहीं है. वहां तो जिसकी जो मरजी आ रही है, लिख रहा है. वहां तो हरकोई अपने इतिहास को स्वर्णिम बताने में लगा हुआ है, फिर चाहे वह सत्य से कितना परे ही क्यों न हो! ऐसे में कहने की जरूरत नहीं कि

जिन देशों का इंटरनेट पर राज है...आजकल विश्व में उन्हीं के स्वर्णिम इतिहास की तूती बोल रही है. और उसमें सत्य तो जाने कहां खो गया है, पता ही नहीं चल रहा. लेकिन यहां मैं एकबात स्पष्ट कर दूं कि मैं आज सिर्फ सहिष्णुता सिखाने हेतु प्रकट हुआ हूँ. ना तो मुझे इतिहास बताने में कोई रुचि है और ना अपनी धरती की शेखी बघाड़ने में. मैं समझाना सिर्फ इतना चाह रहा हूँ कि जिस असहिष्णुता ने समृद्धि के शिखर पर बैठे भारत को गरीब बना दिया, उस असहिष्णुता से सबक लो और उसे छोड़ो.

और जहां तक भारत की धरती के पांच हजार वर्ष पूर्व प्रगति के शिखर पर बैठे होने की बात है, तो उसका अंदाजा आपको मेरे इतिहास से ही हो जाएगा. निश्चित ही उससे साफ हो जाएगा कि मैं अपनी धरती के प्रगतिशील युग की शेखी नहीं मार रहा. मुझे इसकी जरूरत भी नहीं. परंतु बात समझने तथा समझाने हेतु इसकी चर्चा आवश्यक है, सो कर रहा हूँ. अत: यहां-वहां की बात न कर मैं सीधे महाभारत के युद्ध के बाद क्या हुआ, उसपर आ जाता हूँ. निश्चित ही इस महायुद्ध के बाद सारी प्रगति ठंडी पड़ गई. वरना "खूशबूदार ईतरों से लेकर एक-से-एक गहने तक" किस-किस चीज का इस्तेमाल उस जमाने में नहीं हो रहा था...? खैर, युद्ध समाप्त हो गया. चारों ओर मातम छा गया. हजारों सिपाही मारे गए. गाड़े-घोड़े सब नष्ट हो गए. चारों ओर गरीबी, बेरोजगारी तथा भूखमरी का राज हो गया. जहां आनंद और उत्सव हेतु एक-से-एक समारोह आयोजित किए जाते थे, जहां मनोरंजन हेतु चौपर जैसे एक-से-एक खेल खेले जाते थे, जहां नृत्य व संगीत कला का आनंद बात-बात पर लिया जाता था; उसकी जगह रोटी हेतु संघर्ष प्रारंभ हो गया. अर्थात एक युद्ध ने सबकुछ बदलकर रख दिया. यदि इस महायुद्ध के बाद भी कुछ नहीं बदला था तो वह था, टुकड़े-टुकड़े में बंटे हजारों राज्यों का अस्तित्व. जल्द ही हर नगर फिर एक राज्य बन गया, तथा उसने फिर अपना एक नया राजा खोज लिया.

हालांकि भले ही टुकड़े-टुकड़े में बंटे राज्य नहीं बदले थे, वे भले ही फिर जल्द ही अस्तित्व में आ गए थे; परंतु जीवन के स्तर पर सबकुछ बदल गया था. महाभारत जैसे महायुद्ध के दरम्यान हुए विनाश की छाप आर्यावर्त के चप्पे-चप्पे पर देखी जा सकती थी. सारे विकास की जगह गरीबी और भूखमरी ने ले ली थी. अर्थात पहले आपस में संघर्ष कर रहे थे, अब जीवन से संघर्ष कर रहे थे. हां एक बात थी, मेरी यानी भारत की धरती पर कुदरत की अपार मेहरबानी शुरू से रही है. यहां की जमीन ना सिर्फ उपजाऊ है, बल्कि नदियों की भी यहां हमेशा से भरमार रही है. बस सबने नदी किनारे बसना शुरू कर दिया. इन संघर्ष के दिनों में भोजन प्रमुख जरूरियात तथा खेती प्रमुख व्यवसाय बनके उभरा. नृत्य, उत्सव, शाही-भोजन, शाही-रथ वगैरह तो महाभारत के युद्ध के बाद वैसे ही गायब हो चुके थे. हालांकि करीब हजार वर्ष की मेहनत के बाद धीरे-धीरेकर गाड़ी फिर पटरी पर आने लगी. मानना होगा कि मेरे धरतीवासियों ने जीवन के इस कठिन संघर्ष को अच्छे से झेला. खासकर यह देखते हुए कि सभी महान योद्धाओं तथा प्रतिभावान लोगों को "महाभारत का

विनाशकारी युद्ध" खा चुका था. ऐसे में कहने की जरूरत नहीं कि हजार वर्ष का यह संघर्ष, आम प्रजा का अपना संघर्ष था. आम मनुष्य ने इसपर अपने बूते पे विजय पाई थी. इस संघर्ष का कोई नायक नहीं था. फिर भी इस संघर्ष का एक बेजान नायक जरूर था. आप कहेंगे बेजान नायक...? जी हां, भारत को फिर प्रगति की राह पर लगानेवाला एक बेजान नायक ही था. ...और वह नायक था; महाभारत के प्रगतिशील युग में अर्जित किए हीरे-जवाहरात और सोना. उस समय इतना सोना तथा इतने हीरे-जवाहरात भारत में मौजूद थे कि उसकी कल्पना ही करना असंभव है. यहां यह भी ध्यान रख लेना कि यहां मौजूद सोने तथा हीरे-जवाहरातों ने इस धरती के इतिहास को बड़ा प्रभावित भी किया. उसके साथ ही यहां की उपजाऊ जमीन, बहती नदियां तथा संतुलित कुदरती वातावरण ने भी इस धरती के इतिहास को पूरी तरह से बदलकर रख दिया.

निश्चित ही आप कहेंगे...कैसे? तो वह भी बताता हूँ. भले ही महाभारत के विनाशक युद्ध का यहां के जीवनस्तर पर बुरा प्रभाव पड़ा था, परंतु बावजूद इसके यहां मौजूद सोने व हीरे-जवाहरातों के कारण भारत गरीब तब भी नहीं था. भारत उस समय भी समृद्ध था, और ऐसा समृद्ध कि महाभारत के विनाशक युद्ध के बाद भी इसे "सोने की चिड़िया" ही कहा जाता था. वहीं दूसरी ओर कुदरत की अपार कृपा के कारण यहां ना सिर्फ जीना आसान था, बल्कि प्रगति करना भी ज्यादा मुश्किल नहीं था. जबकि इसके विपरीत भारत के आसपास की धरतियां ना तो समृद्ध थी और ना ही उनपर कुदरत उतनी मेहरबान थी. ना तो वहां की जमीनें उपजाऊं थी, और ना वहां का मौसम ही संतुलित था. बस इन सबके चलते आसपास के धरतीवासियों की भारत पर नजर पड़नी शुरू हो गई. हो सकता है आप कहें या सोचें कि बात सहिष्णुता की चल रही है उसमें तुम अपनी धरती का इतिहास क्यों घुसेड़ रहे हो.... तो मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मैं कोई भी बात व्यर्थ या अकारण नहीं करता हूँ. यहीं से तो भारत की सहिष्णुता का महान इतिहास प्रारंभ होता है.

सो हुआ यह कि महाभारत के विनाशक युद्ध के करीब हजार वर्षों में भारत की गाड़ी फिर पटरी पर आ गई. और भारत की इस खुशहाली ने सबसे पहले ईरान के कुछ लोगों को आकर्षित किया. वे अपना देश छोड़ पूरब में जमुना नदी के किनारे तक आ बसे. इन्हें 'आर्य' कहा गया और भारत की सहिष्णु प्रजा ने ना सिर्फ उनका स्वागत किया, बल्कि जल्द ही उनसे हिल-मिल भी गए. और आप मानेंगे नहीं कि वह भी इस कदर जैसे चाय में शक्कर घुल-मिल जाती है. यही नहीं, भारत के सिंधु घाटी में आए इन ईरानियों की छाप आज भी भारतीय संस्कृति पर पाई जाती है. वर्तमान भारत की व्यावसायिक राजधानी मुंबई में आज भी अनेक ईरानी रेस्टोरेन्ट मौजूद हैं. और इन रेस्टोरेन्टों की चाय की चुस्कियां पूरे मुंबई में मशहूर है. इसे कहते हैं संस्कृति तथा शौकों को अपनाने की सहिष्णुता. आपस में बिना भेद के एक हो जाने की सहिष्णुता. और भारत की सहिष्णुता का यही इतिहास है जो आज पूरी दुनिया को समझना आवश्यक है.

खैर, हरे-भरे मैदानों और रोजी-रोटी के लिए भारत में आने की परंपरा, जो आज से चार हजार वर्ष पूर्व ईरानियों से प्रारंभ हुई थी, फिर वह सिलसिला अंत तक नहीं थमा. भारत की समृद्धि, यहां की हरियाली तथा यहां के संतुलित मौसम की चर्चा चारों ओर फैलने लगी. और इसी से आकर्षित होकर आज से करीब पच्चीस सौ वर्ष पूर्व फारस के एकेमेनिड शासकों ने भारत पर हमला किया. करीब दो सौ वर्षों तक उन्होंने अफगानिस्तान, पंजाब तथा राजस्थान पर राज किया. और तभी एक और इतिहास लिखा गया. आज से करीब तेइस-चौबीस सौ वर्ष पूर्व करीब 326 BC में मैसिडोनिया के शासक सिकंदर ने भारत पर हमला किया. सिकंदर ने सबसे पहले तो अफगानिस्तान, पंजाब और राजस्थान पर राज कर रहे एकेमेनिड के शासकों को युद्ध में हराया. और तत्पश्चात वह अगले करीब दो वर्षों तक पश्चिम भारत के अन्य राज्यों पर भी हमला करता गया. इन दो वर्षों में सिकंदर ने अनेक पश्चिमी राज्यों पर अपना शासन कायम किया. इन हमलों के दौरान सिकंदर और पोरस के मध्य हुआ युद्ध काफी शानदार रहा. हालांकि अंत में पोरस को हार का सामना करना पड़ा. खैर, उधर लगातार के हमलों से सिकंदर की सेना थक चुकी थी, सो अंत में उसे वापस लौट जाना पड़ा. लेकिन जाते-जाते भी वह यहां से बड़ी मात्रा में हीरे-जवाहरात व सोना अपने साथ ले गया. साथ ही अपनी सेना के एक बड़े हिस्से को वह शासन करने हेतु यहां छोड़ भी गया. खैर, इसके बाद इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय लिखा गया. मौर्य शासक चन्द्रगुप्त और उनके कूटनीतिक सलाहकार चाणक्य ने मिलकर सिकंदर से हारे सब राजाओं को एक किया तथा अपनी संयुक्त ताकत दिखाते हुए सिकंदर की सेना को खदेड़ दिया. और इसके साथ ही चंद्रगुप्त के नेतृत्व में प्रथम बार भविष्य के अखंड भारत की नींव रखी गई. चन्द्रगुप्त का शासन गांधार से लेकर बंगाल तक तथा कश्मीर से लेकर दक्षिणी पठार तक फैला हुआ था. चन्द्रगुप्त के राज में देश में फैली इस अखंडता को भारत के इतिहास की एक बड़ी उपलब्धि कहा जा सकता है. उसके पश्चात सम्राट अशोक ने राजगद्दी सम्भाली. लेकिन उनकी मृत्यु के चन्द वर्षों में ही मौर्य वंश के शासन का अंत आ गया. और उसके साथ ही एकबार फिर सभी छोटे-मोटे राज्यों ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया. यानी बमुश्किल स्थापित हुई अखंडता फिर टुकड़ों-टुकड़ों में बंट गई.

अब यह तो भारत के भीतर की बात थी. परंतु भारत के बाहर यहां की समृद्धि हमेशा चर्चा का विषय बनी रही. और दुर्भाग्य से समृद्धियों की यह चर्चा बाहर के शासकों को भारत पर हमला करने हेतु प्रेरित भी करती रही. और इसी कारण यह धरती हमेशा बाहरी आक्रमणों का शिकार रही. सन 1001 में महमूद गजनी ने अरब से अपनी सेना समेत भारत का रुख किया. उसने भारत पर कुल सत्रह बार आक्रमण किया. अपने हर आक्रमण में उसने यहां के सोमनाथ, कन्नौज, मथुरा तथा वृन्दावन के मशहूर मंदिरों को खूब लूटा. खैर, एक दिन महमूद गजनी के आक्रमणों का भी अंत आया. लेकिन उसके बाद सन् 1526 में भारत के इतिहास में एक और नया मोड़ आया. और उस मोड़ ने एक अनोखा

इतिहास रच दिया. हुआ यह कि उस समय दिल्ली की कमजोर पड़ती सल्तनत को देखते हुए उस समय के पंजाब के राजा दौलत खान लोदी ने दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी को परास्त करने हेतु काबुल के शासक बाबर को भारत आने का निमंत्रण दिया. और बाबर ने पानीपत के युद्ध में इब्राहिम लोदी को परास्त किया. इसके साथ ही बाबर के नेतृत्व में भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना हो गई. फिर तो यह मुगल शासन रोज-रोज फैलता चला गया. मुगल और उनके वंशज हुमायुं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां तथा औरंगजेब ने मिलकर करीब 325 वर्ष तक भारत पर शासन किया. इस युग की एक अच्छी बात यह रही कि अकबर के शासनकाल में भारत ने एकबार फिर अखंडता की ओर कदम बढ़ाए. बाकी तो जब मेरी धरती के लोग सहिष्णु हैं, तो फिर मेरी सहिष्णुता का तो हिसाब ही नहीं लगाया जा सकता है, अत: मुझे मुगलशासन की सिर्फ अच्छाइयां याद है. बाकी जो कुछ भी हुआ, उसे मैं कबका भूल चुका. सो मैं अभी तो अपने इतिहास की बात ही आगे बढ़ाऊं.

उधर मुगलशासन के दरम्यान ही एक और ऐसा डेवलेपमेन्ट हुआ, जिसने भारत के भविष्य के इतिहास को काफी प्रभावित किया. मुगलों के दौर में जब जहांगीर का शासन था तब उनकी इजाजत से "सन 1612 में इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने" व्यापार फैलाने हेतु भारत में कदम रखा. और धीरे-धीरेकर इस इस्ट इंडिया कंपनी ने व्यापार के साथ-साथ यहां के राजनैतिक वातावरण में भी रस लेना शुरू किया. और इसका अंतिम परिणाम यह हुआ कि जब औरंगजेब के कारण ही मुगलशासन का अंत हुआ, उस समय तक भारत का करीब दो तिहाई हिस्सा इस्ट इंडिया कंपनी के कब्जे में आ चुका था. और बचा हुआ हिस्सा जहां उनका शासन नहीं था, वह वे राजे थे जो अंग्रेजों के वफादार थे. यानी कुल-मिलाकर देखा जाए तो पूरे भारत पर ईस्ट इंडिया कंपनी का सीधा या परोक्ष शासन हो चुका था. अंग्रेजों का यह शासन करीब डेढ़ सौ वर्ष चला. इस दौरान जालियांवाला बाग की क्रूरता भी हुई तथा और भी न जाने क्या-क्या हुआ. लेकिन उन सबमें मैं जाना नहीं चाहता. मैं स्वभाव से ही सहिष्णु हूँ तथा सिर्फ अच्छाइयां याद रखने का आदी हूँ. और निश्चित ही अंग्रेज शासन के दरम्यान भी एक-से-एक अच्छे कार्य हुए. सबसे पहले तो देश वास्तविकता में एक हो गया. पूरे देश में एक कानून लागू हुआ. साथ ही भारत का संपर्क इसी दौरान सम्पूर्ण विश्व से हुआ. पूरे विश्व से भारत के व्यापारिक संबंधों की स्थापना भी इसी दौर में हुई. इसके अलावा रेलवे, सड़कों तथा अन्य इन्फ्रास्ट्रक्चर की स्थापना भी अंग्रेजों के शासनकाल में ही हुई. यही क्यों, कई पुरानी अनावश्यक परंपराओं जैसे सती-प्रथा, मानव-बलि तथा गुलामी की प्रथा पर प्रतिबंध भी "अंग्रेज-शासन" के दरम्यान ही लगा.

खैर, अंत में मेरी धरती के लालों ने अपनी धरती को 1947 में अंग्रेजों से आजाद करवा लिया. लेकिन यह आजादी कई मायनों में महंगी पड़ी. एक तो अंग्रेजों ने भारत को खूब लूटा. वे यहां से न जाने कितने बेशकीमती हीरे-जवाहरात तथा सोना अपने साथ ले गए. यहां तक कि ब्रिटेन की महारानी के महल की शोभा बढ़ा रहा कोहिनूर हीरा भी भारत

का ही है. इसके अलावा अंग्रेजों से आजादी के साथ ही मेरे दो टुकड़े भी हो गए. एक भारत, जो मैं आपसे बात कर रहा हूँ तथा दूसरा मेरा ही अंश पाकिस्तान. खैर मेरे लिए यह कोई नई बात नहीं थी. आज के अफगानिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, भूटान, तिब्बत वगैरह भी किसी समय मेरी ही धरती का हिस्सा थे. अब धरतियों को बांटना इन्सानी फितरत है, अत: उसमें मुझे ज्यादा जाना भी नहीं है. मुझे तो सिर्फ इस बात का गर्व है कि युगों से इतनी छोटी-छोटी सल्तनतों में विभाजित रहने के बावजूद, अनेकों बार विदेशी हमलों का शिकार होने के बावजूद तथा लंबी गुलामी के बावजूद...आज मैं एक अखंड तथा आजाद धरती हूँ.

तो यह तो हुआ मेरा इतिहास. और अब मैं सीधे इस बात पर आता हूँ कि मैंने आपको अपना यह इतिहास क्यों बताया. निश्चित ही इस धरती की सहिष्णुता तथा यहां की समृद्धि को समझाने के लिए. और पहले चर्चा समृद्धि की कर लेता हूँ. सोचो यह कि इस धरती के बेशकीमती हीरे-जवाहरातों को इस कदर लुटे जाने के बावजूद भी आज यह विशाल देश अपने पैरों पर खड़ा है. कोई कुछ भी कहे, आज दुनिया के प्रमुख देशों में मेरी गिनती होती ही है. अंदाजा सिर्फ यह लगाओ कि ऐसे में यह धरती युगों से कितनी समृद्ध रही होगी. और जहां तक सहिष्णुता की बात है तो उसकी झलक तो आपको मेरे इतिहास से ही समझ में आ गई होगी. और समझ में न आई हो तो मैं सहायता कर देता हूँ. एक बात तो आप समझ ही गए होंगे कि युगों से यहां पर एक ही संस्कृति तथा एक ही धर्म में माननेवाले लोग थे. हालांकि इस दरम्यान भारतीय संस्कृति में एक बड़ा परिवर्तन अवश्य आया. आज से करीब पच्चीस सौ वर्ष पूर्व यहां महान बुद्ध ने जन्म लिया. और उनके बढ़ते प्रभाव से हजारों ने हिंदू धर्म को छोड़कर बौद्ध धर्म अपनाया. लेकिन बुनियादी तौर पर दोनों धर्मों में कोई विशेष फर्क नहीं था. अत: कहा जा सकता है कि आज से करीब 1500 वर्ष पूर्व तक एक ही संस्कृति के लोग यहां रहते थे. लेकिन उसके बाद जब बाहर के अलग-अलग देशों के शासक यहां आने लगे तो उनके साथ वहां की आम जनता भी यहां स्थानांतरित होने लगी. और मेरे धरतीवासियों ने ना सिर्फ सबका स्वागत किया बल्कि सबकी अच्छी बातों को ग्रहण भी किया. फिर बात चाहे खान-पान की हो या संस्कृति की. यही कारण है कि आज के भारतीय खान-पान तथा आज की भारतीय संस्कृति पर मुगलों से लेकर अंग्रेजों तक सबका प्रभाव साफ-साफ देखा जा सकता है. यानी यहां की प्रजा इतनी सहिष्णु है कि अच्छा देखते ही अपना लेती है. मौका पड़ने पर बेहतरी हेतु युगों के शौक व संस्कृति तक को रूपांतरित करने में जरा भी संकोच नहीं करती. यहां तक कि जहां आज से पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व भारत में एक भी मुसलमान नहीं था, यदि अखंड भारत यानी पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान को भी गिन लिया जाए तो उस अखंड भारत के मुसलमानों की कुल संख्या, साठ करोड़ से ऊपर पहुंच जाती है. यानी इतने बड़े अमेरिका की कुल आबादी से भी दोगुना तो यहां के अखंड भारत की सिर्फ मुस्लिम आबादी हो जाती है. इसे विभाजित करके समझाऊं तो 19 करोड़ के करीब पाकिस्तान में, 16 करोड़ के

करीब बांग्लादेश में, 3 करोड़ के करीब अफगानिस्तान में तथा 22 करोड़ के करीब मुसलमान आज की तारीख में भारत में बसते हैं. सोचिए इनमें से कुछ ही हैं जो बाहर से आए थे, बाकी सब यहीं के निवासी हैं. और यहीं के निवासी होने का अर्थ यह है कि जिन्होंने बाद में मुस्लिम धर्म अपनाया है. लेकिन इससे भी मेरे देश की जनता को कोई एतराज नहीं. इसे कहते हैं सहिष्णुता. न जाने कितनी ईसाई मिशनरी आज भी आजाद भारत में सक्रिय हैं. उनके प्रभाव में आकर भी हजारों लोग रोज अपना धर्म छोड़ ईसाई धर्म स्वीकार रहे हैं, उससे भी यहां किसी को कोई एतराज नहीं. और सबसे बड़ी बात यह कि हिंदू धर्म किसी प्रकार की जबरदस्ती में विश्वास नहीं करता. ऐसे उदाहरण आपको ना के बराबर मिलेंगे जहां किसी क्रिश्चियन या मुसलमान को हिंदू में कनवर्ट करने की कोशिश की जा रही हो. बस यही बात मैं समझाना चाह रहा हूँ. धार्मिक और सांस्कृतिक सहिष्णुता की अंतिम ऊंचाइयां मेरे धरतीवासियों ने छुई हैं. यहां की संस्कृति ‘‘धर्म परिवर्तन में’’ नहीं बल्कि ‘‘मनुष्य के मन को बदलने में’’ विश्वास करती है. यहां की संस्कृति का संख्या से ज्यादा गुणवत्ता पर विश्वास है.

खैर, भारतीय सहिष्णुता की मैं आप लोगों को चन्द और मिसालें देता हूँ जिससे निश्चित ही बात आपके जहन में पूरी तरह से स्पष्ट हो जाएगी. यह तो आंकड़ों से ही स्पष्ट हो जाता है कि मुस्लिम राष्ट्र न होते हुए भी यहां 22 करोड़ के करीब मुसलमान बसते हैं. फिर भी देश में गजब का एका है. यहां सब-के-सब, फिर चाहे वे किसी भी धर्म के हों, सिर्फ भारतवासी हैं. यहां का हर मुस्लिम एक पक्का भारतीय है. यहां तक कि आज पूरे विश्व पर IS नामक आतंकी संस्था की काली छाया छाई हुई है. IS का असर ऐसा है कि मुस्लिमों की ना के बराबर जनसंख्या होने के बावजूद अमेरिका, ब्रिटेन तथा यूरोपियन देशों के मुस्लिम ना सिर्फ IS से प्रभावित हो रहे हैं बल्कि उसमें शामिल भी हो रहे हैं. और भारत में 22 करोड़ के करीब मुसलमान होने के बावजूद ऐसा ठोस उदाहरण एक भी नहीं है कि यहां के युवा बड़े पैमाने पर IS में शामिल हुए हों. क्यों? क्योंकि यहां का मुसलमान मनुष्य एवं भारतीय पहले है, तथा मुसलमान बाद में. कहने का तात्पर्य यह है कि सहिष्णुता यहां की मिट्टी में है. और यह सहिष्णुता किसी धर्म या जात की मोहताज नहीं. यही क्यों, मैं और उदाहरण देता हूँ. आप सभी जानते ही हैं कि मुगलों ने यहां बाहर से आकर करीब तीन सौ से अधिक वर्षों तक शासन किया. और आपको आश्चर्य होगा कि उन्हें भी आज भारत में उतने ही सम्मान से याद किया जाता है जितने सम्मान से लोग इस धरती के लालों को याद करते हैं. यहां तक कि भारत की राजधानी के अधिकांश प्रमुख मार्ग आज भी तमाम मुगल सम्राटों के नाम से है. वहीं यदि अंग्रेजों की बात करूं तो उनके रहन-सहन तथा उनकी बोल-चाल से आज का भारत पूरी तरह से सराबोर है. यही नहीं, आज के भारत की प्रमुख कामकाजी भाषा भी अंग्रेजी ही है. इसे कहते हैं सहिष्णुता. अब आप ही बताइए मिस्टर

ओबामा कि धार्मिक तथा सांस्कृतिक सहिष्णुता की ऐसी मिसाल आप कहां पाएंगे? बताओ मुझे कोई दूसरा ऐसा उदाहरण, जहां सहिष्णुता की ऐसी छाप दिखती हो?

अब जरा वैश्विक असहिष्णुता पर भी नजर घुमाइए. अंग्रेजी निश्चित ही आज विश्व की प्रमुख भाषा है. आप भी जानते हैं कि तमाम यूरोपियन भाषाएं अंग्रेजी के काफी निकट हैं. यूरोप की सभी भाषाओं की लेखन शैली भी अंग्रेजी है. लेकिन बावजूद इसके वहां कितने लोग अंग्रेजी बोलते हैं? ना के बराबर. क्यों...? क्योंकि वे असहिष्णु हैं. असहिष्णुता का अर्थ ही यह है कि अपनी बात पर अड़े रहना. असहिष्णुता का अर्थ ही है कि दूसरे की अच्छी बातों और विचारों तक को तवज्जो न देना. यही क्यों, आप विश्व के बड़े-बड़े राष्ट्रों "रशिया और चाइना" की बात करें तो वे भी अपनी भाषा, अपने रहन-सहन या अपनी भोजन-शैली का कुछ भी छोड़ना नहीं चाहते. किसी का कुछ कितना ही अच्छा हो, पर वे लोग अपनाएंगे नहीं. ...जबकि मेरे धरतीवासी "सबका सबकुछ अच्छा अपनाने को" हमेशा तत्पर रहते हैं. यही नहीं, अपने में कोई खामी दिखे, तो छोड़ने को भी उतने ही तत्पर रहते हैं. यही सब तो सहिष्णुता के लक्षण हैं. यही कारण है कि विश्व का ऐसा कुछ श्रेष्ठ नहीं जो भारत ने न अपना रखा हो. बस मेरे धरतीवासियों की इसी सहिष्णुता ने मेरा सर विश्व की अन्य धरतियों से हमेशा ऊंचा रखा है. और मैं पूरे विश्व से ऐसी ही सहिष्णुता अपनाने की गुजारिश करता हूँ. मेरी यह बात हमेशा ध्यान रख लेना कि "मेरा-मेरा" करने में कोई मजा नहीं है. जीवन का मजा हर श्रेष्ठ चीज को अपनाने में है.

अत: मिस्टर ओबामा, आपने यहां आकर मेरे धरतीवासियों को सहिष्णुता का सबक सिखाने का जो प्रयास किया, मैं उसे भी सकारात्मक तौरपर ही ले रहा हूँ. और उतने ही खुले हृदय से यहां के धरती की सहिष्णुता बाबत मैं आपको समझाने का प्रयास कर रहा हूँ. मैं आपसे सिर्फ एकबात पूछना चाहता हूँ कि आपने अपनी किसी यूरोपियन देश की यात्रा के दरम्यान वहां के लोगों को असहिष्णुता छोड़कर अंग्रेजी सीखने की नसीहत क्यों नहीं दी? अरे, आपसे तो अपनी सऊदी अरब की यात्रा के दौरान भी वहां के लोगों को सहिष्णु बनने हेतु दो शब्द तक नहीं कहे गए. फिर विश्व की सबसे सहिष्णु धरती पर आकर उसे इतनी आसानी से सहिष्णुता की नसीहत कैसे दे पाए? क्योंकि आप भी तहेदिल से जानते हैं कि यही एकमात्र धरती है जो सही मायने में सहिष्णु है. जो आपकी बात को खुले मन से सुनेगी. बाकी किसी अन्य देश की यात्रा के वक्त आपने सहिष्णुता पर कोई नसीहत कभी नहीं दी, क्योंकि आप जानते हैं कि वे रत्तीभर सहिष्णु नहीं. वहां आपके सीख देने से बवाल खड़ा हो सकता है. यही मेरी धरती के सहिष्णु होने का प्रमाणपत्र है. ...और मैं इसी से संतुष्ट हूँ.